REVELATION 14 SERIES, STUDIES #51 THRU #57, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक **#51 - #57** क्रिस मॅकन – हिन्दी

Revelation 14 Series, Study #51 by Chris McCann, originally aired October 21, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 51, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 21 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 51 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:20 पढेंगे :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

हम "रसकुण्ड" पर चर्चा करते आये थे कि वह किस प्रकार रौंदा जा रहा था। हमने पिछले अध्ययन में यह भी देखा कि 'नगर' का अभिप्राय 'परमेश्वर के नगर' या 'परमेश्वर के राज्य' से है, और प्रत्येक उद्धार पाने वाला व्यक्ति उसका नागरिक है।

इसके पहले कि हम आगे बढ़े, मैं उस बारे में कुछ और चर्चा करना चाहता हूँ, इसलिये आइये हम इब्रानियों की पुस्तक के 11 वें अध्याय में पढ़ें। वहाँ हमें कुछ पदें मिलती है जिनका संबंध 'परमेश्वर के नगर' से है। अब्राहम के विषय में चर्चा करते हुये इब्रानियों 11:10 में लिखा है :

क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।

परमेश्वर एक नगर बनाने के बारे में उसी प्रकार कहते हैं जैसे कि वे एक घर बनाने या मन्दिर बनाने के बारे में कहते हैं। ये सभी एक ही बात की तस्वीर है, अर्थात उद्धार की तस्वीर। जब परमेश्वर ने स्वर्गीय यरूशलेम या नया यरूशलेम बनाया, जैसा कि प्रकाशित वाक्य 21 में यह नाम दिया गया है, उसने उन्हें 'अपनी प्रजा' के जीवते पत्थरों को जोड–जोड़कर बनाया, हर बार जब किसी व्यक्ति को उसने उद्धार दिया, तब मानों उन्हें परमेश्वर के नगर में जोड़ दिया। समस्त इतिहास में परमेश्वर उस नगर को बना रहा था और जब उसने 21 मई 2011 को स्वर्ग का द्वार बन्द करने के पूर्व चुने हुये अंतिम व्यक्ति का उद्धार कर लिया, तब नगर का निर्माण कार्य पूरा हुआ। नगर अब पूर्ण हुआ है, और अब परमेश्वर उस में निवास करता है, क्योंकि वह अपने चुने हुओं में से प्रत्येक की आत्मा में निवास करता है। पुनः यह तस्वीर परमेश्वर का घर पूरा करने के समान है।

इब्रानियों 11:14–16 में आगे कहा गया है :

जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है॥

यही वह नगर है, फिर जैसा प्रकाशित वाक्य में लिखा है – ''नगर के बाहर उस रसकुण्ड मे दाख रौंदे गयें" और उनमें 'चुने हुये लोग' नहीं थे। यह वर्तमान समय में वास्तविक नगर (स्थान) नहीं है, परन्तु संसार के अंत के बाद परमेश्वर एक नया आकाश और नयी पृथ्वी का सृजन करेंगे, और अपने लोगों को एक नयी पुनरूत्थान प्राप्त देह प्रदान करेंगे, तब वे उन्हें उस नयी सृष्टि में रखेंगे। तब मैं सोचता हूँ कि हम नगर का पूरा होना या पूरा बन जाना मान सकते हैं। उस अर्थ में परमेश्वर के लोग जिस तरह उसमें निवास करते हैं वह हमारे आज के तरीके से भिन्न है अब वे जिनका उद्धार हो चुका है, वे सब उस 'स्वर्गीय देश' के नागरिक हैं और मसीह यीशु में उस नगर में 'उपस्थित' है, क्योंकि हम मसीह में स्वर्गीय स्थानों पर बैठाये गये हैं। हम 'वहाँ' है, पर हम 'यहाँ' भी है, यदि हम शारीरिक रूप में जीवित हैं और पृथ्वी पर निवास कर रहे हैं। इस कारण जब परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 22:14 में कहते हैं ''धन्य है वे जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं क्योंकि उन्हें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे'', तब फाटक का अभिप्राय स्वर्ग के द्वार से है और वह तब बंद कर दिया गया जब परमेश्वर ने अपनी उद्धार की योजना का अंत किया। प्रकाशितवाक्य 22:15 में आगे यह लिखा है :

पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला, और गढ़ने वाला बाहर रहेगा॥

यहाँ फिर हम देखते है कि ये लोग नगर के बाहर है, परन्तु फिर भी यह स्थान शाब्दिक नहीं है, परन्तु यह परमेश्वर के चुने हुओं के राज्य के बाहर है। यदि उस समय तक (21 मई 2011 से) किसी ने उद्धार नहीं पाया तो वे 'नगर के बाहर' या 'स्वर्ग के राज्य' के बाहर है। इब्रानियों 12:22–23 में यह लिखा है :

पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं: और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं।

''पहिलौठों की साधारण सभा'' का संदर्भ प्रभु यीशु मसीह की अनंतकालीन कलीसिया से है, वह स्वयं मृतकों में से पहिलौठा है। इस प्रकार, जब हम उद्धार पा लेते हैं तब हम यहाँ पहुँचते हैं – जीवते परमेश्वर के नगर में।

स्मरण करे कि परमेश्वर ने पुराने नियम में क्या कहा था (यह हमारी सहायता करेगा यह समझने में कि यद्यपि हम अभी पृथ्वी पर ही है, परमेश्वर हमें 'उनके नगर' में मानते हैं) जकर्याह 14:1 के अनुसार :

सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन आने वाला है जिस में तेरा धन लूट कर तेरे बीच में बांट लिया जाएगा।

यह इस पृथ्वी के यरूशलेम की चर्चा है, स्मरण रखें कि गलतियों 4:22–25 में कैसे परमेश्वर इन दोनों नगरों (यरूशलेमों) में भेद करते हैं, वहाँ लिखा है :

यह लिखा है, कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है।

इस प्रकार, यरूशलेम जो 'अब है', वह पृथ्वी का या ऐतिहासिक यरूशलेम है, जो कलीसियाओं की ओर संकेत करता है।

उसके बाद गलतियों 4:26 में लिखा है :

पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।

ये 'चुने हुये' या प्रतिज्ञा के संतान हैं।

गलतियों 4:27–29 में यह लिखा है :

क्योंकि लिखा है, कि हे बांझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर, तु जिस को पीड़ाएं नहीं उठतीं गला खोलकर जय जयकार कर, क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है। हे भाइयो, हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है।

यहाँ परमेश्वर 'यरूशलेम जो आज है' और जो 'यरूशलेम उपर है' या स्वर्गीय यरूशलेम के बीच अन्तर बताते है, स्वर्गीय यरूशलेम जीवते परमेश्वर का नगर है। वह बाईबल का सिय्योन पर्वत है और हमें सदैव याद रखना चाहिये कि जब परमेश्वर यरूशलेम का संदर्भ लेते है, वे किस यरूशलेम की बात कर रहे हैं। जकर्याह 14:1 में, जहाँ लिखा है कि – ''मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा, और वह नगर ले लिया जायेगा", यह भाषा परमेश्वर द्वारा शैतान को खुला छोड़ने और संतों की छावनी पर आक्रमण करने और 'दो गवाहों' को घात करने एवं अन्य संबंधित घटनाओं से मेल खाती है, और यह मत्ती 24:15 की भाषा से भी मेल खाती है, जहाँ लिखा है, ''इसलिये जब तुम उन उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को... पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो'', तब उस नगर से बाहर भाग जाना, यह संदर्भ कलीसियाओं का है, यह 'यरूशलेम' पृथ्वी की कलीसियाएँ है क्योंकि वे जीत ली गई है।

वापस जकर्याह में चले, वहाँ जकर्याह 14:2 में ऐसा लिखा है :

क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा, और वह नगर ले लिया नगर। और घर लूटे जाएंगे और स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी; नगर के आधे लोग बंधुवाई में जाएंगे, परन्तु प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहने पाएंगे।

'शेष लोग' (Residue) का अर्थ है, वे लोग जो बचे रहेंगे। जब हम पहली बार पढ़ते हैं, तब इसे नहीं समझते, परन्तु वे जो नगर में से नाश नहीं हुये हैं, वे परमेश्वर के चुने हुये लोग है; हमें स्वर्गीय यरूशलेम से बेदखल नहीं किया गया है जबकि कलीसियाओं पर आये दण्ड का हम पर भी प्रभाव पड़ा है। हमें आज्ञा दी गई थी कि हम कलीसियाओं (भौतिक येरूशलेम) से बाहर निकल आए, परन्तु वास्तव में परमेश्वर हमें सांत्वना देते हुये कह रहे हैं कि भले ही 'पृथ्वी पर यरूशलेम' (सामुहिक कलीसिया) मेरे क्रोध के आधीन है और नष्ट कर दी गई है, तब भी हम "स्वर्गीय यरूशलेम" के नागरिक है, और हम उस नगर से निकाले नहीं जाएंगे क्योंकि हमें अनंत–जीवन दिया जा चुका है। हमारी नागरिकता अनंतकाल की है।

हमें ध्यान रखना चाहिये कि परमेश्वर किस यरूशलेम की बात कर रहे हैं जब वे उन्हें उनके क्रोध के रसकुण्ड में नगर के बाहर रौंदे जाने की चर्चा करते है, तब वे पृथ्वी के यरूशलेम की नहीं परन्तु जीवते परमेश्वर के अनंतकालीन नगर अर्थात् स्वर्गीय यरूशलेम से बाहर की चर्चा करते है। दूसरे शब्दों में वे सब जो मसीह में निर्भय और सुरक्षित नहीं है वे परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करेंगे, जिस प्रकार, इतिहास में परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को नूह के जहाज में जाने की आज्ञा दी और परमेश्वर ने द्वार बन्द कर दिया, सभी लोग जो 'जहाज के बाहर' थे (अर्थात् वे सभी जो उस समय दुनिया में थे) वे परमेश्वर के क्रोध के आधीन थे और वे जलप्रलय के द्वारा नाश हो रहे थे। केवल वे जो

जहाज के भीतर थे, वे जल प्रलय से बचाए गए। परमेश्वर यही बात कह रहे हैं, जब वे इस भाषा का उपयोग कर रहे हैं कि – ''नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गये।''

जब भी हम 'न्याय के दिन' और 'जगत के अंत' से संबंधित बातें पढ़ते हैं, हम बहुत बार परमेश्वर को लोगों को 'बाहर डाल देने' की आज्ञा देते हुये सुनते हैं, उदारहण के लिये जब राजा विवाह के भोज में आये, अतिथियों से मिलने आया, हम मत्ती 22:11–12 में पढ़ते है :

जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया; तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था। उस ने उससे पूछा हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया? उसका मुंह बन्द हो गया।

आत्मिक रूप से विवाह के वस्त्रों का अर्थ है – मसीह की धार्मिकता से ढ़ँका होना और राजा, स्वयं परमेश्वर है, वे भोज में आते हैं जिसका अर्थ है कि विवाह के भोज में कुछ उद्धार न पाए हुये लोग भी हैं। हम जानते हैं कि 'न्याय के दिन' को 'विवाह के भोज' के समान बताया गया है, और परमेश्वर निमंत्रित लोगों से मिलने आते है। वे सभी अतिथियों को बाहर नहीं निकालते जिसका अर्थ है कि सच्चे विश्वासीजन जो वहाँ है उनके पास विवाह के उचित वस्त्र है (मसीह की धार्मिकता) और वे उन्हें पहिनकर वहाँ उपस्थित है। परन्तु वहाँ एक मनुष्य है जिसका उद्धार नहीं हुआ है। उसे धार्मिकता प्रदान नहीं की गई है। उसके पापों को ढ़ाँका नहीं गया है और इसलिये ''उसका मुँह बन्द हो गया।'' तब मत्ती 22:13–14 में आगे लिखा है :

तब राजा ने सेवकों से कहा, इस के हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं॥

यह बात ऐसे मनुष्य पर लागू होती है जो कलीसियाओं से बाहर आकर एक सच्चा विश्वासी होने का, मसीह का अंगीकार करने का और परमेश्वर के चुने हुओं के साथ अपनी पहिचान बनाने का दिखावा किया है। उन्होंने स्वंय को परमेश्वर के सच्चे लोगों के साथ शामिल किया। यह 'गेहूँ' और 'जंगली बीज' (चारे) के साथ–साथ रहने जैसा है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि कलीसियाओं में 'जंगली बीज' (उद्धार न पाए लोग) रहते हैं। परन्तु अब विवाह के भोज में राजा उन अतिथियों की जाँच करने आता है जो भोज में आये है। यहाँ फिर से हम परमेश्वर और मनुष्यों के बीच वही मसला पाते है : क्या तुम्हारा उद्धार हुआ है? ''तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।'' इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं है, और इसका दूसरा विकल्प भी नहीं है। ''भले काम'' करना अच्छी बात है, पर वे किसी का उद्धार नहीं करेंगे। कोई भी व्यक्ति जो अपने अच्छे कामों के द्वारा परमेश्वर के साथ संबंध सुधारने का प्रयास कर रहा है, वह परमेश्वर के क्रोध के आधीन होगा। अंत में परमेश्वर ऐसे सभी लोगों को बाहर निकाल देंगे। जो अतिथी विवाह भोज में आए है उन्हें सुनिश्चित

करने के लिये परमेश्वर ने न्याय के दिन एक कड़ी जाँच रखी है, जिसमें यह खोजा जाता है कि जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता के वस्त्र नही पहने है, उनकी पहिचान करने पर यह बात प्रमाणित हो जाती है कि उन्होंने उचित वस्त्र नहीं पहने है। वे बाहर अंधकार में डाल दिये जाएंगे। वे कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ जाते हैं? ऐसा लगता है कि उनके अंगीकार और सच्चे सुसमाचार एवं परमेश्वर के लोगों के साथ उनकी पहिचान के कारण वे 'नगर' में थे, परन्तु उन्होंने कभी भी 'नया जन्म' नहीं पाया था, इस कारण न्याय के दिन – ''टोन्हें और व्याभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक और हर एक झूठ के चाहने वाले और गढ़ने वाले व्यक्तियों के साथ" परमेश्वर उन्हें भी 'नगर के बाहर' डाल देते हैं। दूसरे शब्दों में अन्य सभी उद्धार न पाये हुओं के साथ वे 'परमेश्वर के नगर' के बाहर डाल दिये जाते है, और 'नगर के बाहर' का अर्थ इस संसार में कहीं भी हो सकता है, अर्थात् मसीह के उद्धार के बाहर क्योंकि आज जो लोग संसार में बाहर है वे 'बाहर अंधकार' में है। यही इस संसार की दशा होगी जब परमेश्वर सूर्य, चन्द्रमा और तारों की ज्योति बुझा देंगे और संसार घने अंधकार में होगा। उद्धार से वंचित होने या बाहर होने का अर्थ है – बाहर के अंधियारे मे होना।

मत्ती के 25 अध्याय में, दस कुँवारियों के दृष्टांत में, 5 बुद्धिमान और 5 मूर्ख है, और उन्होंने शोर सुना कि दूल्हा आ रहा था। तब मत्ती 25:10 में लिखा है :

जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चलीं गई और द्वार बन्द किया गया।

विवाह और भोज एक ही बात है, जैसा मत्ती 22 में था, यहाँ भी परमेश्वर विवाह की बात कहते है और उनकी जो विवाह में उनके साथ भीतर आते है। हम समझ सकते है कि वे (मानों) नगर में या स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते है। वह प्रवेश आत्मिक रूप में होता है जिस पल किसी का उद्धार होता है, वे नगर में लाय जाते है। अब जगत की उत्पत्ति के समय से परमेश्वर ने जिनकों उद्धार देने का निश्चय कर लिया था, वे सब भीतर प्रवेश कर चुके है, और वे पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ उन्हें दर्शाती है जिनके लिये प्रभु ने प्रायश्चित का कार्य किया, वे सब सुरक्षित भीतर गये और दरवाजा बन्द कर दिया गया। यह नूह और उसके परिवार को जहाज में सुरक्षित लाने और तब परमेश्वर के द्वारा द्वार को बन्द करने के समान है। 21 मई 2011 को न्याय का दिन था और उसका जलप्रलय के साथ बंधन है जो बिलकुल 7000 वर्षों पूर्व नूह के 600 वें वर्ष में "दुसरें महिनें के सत्रहवें दिन" हुआ। 21 मई 2011 यह इब्रानी कॅलेंडर में दुसरें महिने का सत्रहवा दिन है। यह एक ही दिन और एक ही महिना है, परंतु उसके बिलकुल 7000 वर्षों के बाद, परमेश्वर यह संकेत दे रहा है, "इसी दिन मैंनें स्वर्ग का द्वार बंद किया। इसी दिन सभी चुने हुओं को राज्य में लाया गया और द्वार बंद कर दिया गया।"

ध्यान दीजिये कि मूर्ख कुँवारियों के साथ बाद में क्या हुआ, मत्ती 25:11–13 में लिखा है :

इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

वे बन्द दरवाजा खुलवाना चाहाती थी, इसका अर्थ है वे बाहर थी, वे 'दरवाजे के बाहर', 'परमेश्वर के राज्य' के बाहर, और 'परमेश्वर के नगर' से बाहर थी। और वह बाहर अंधकार से भरा स्थान है जिसमें संसार के उद्धार न पाये लोग प्रवेश कर चुके हैं क्योंकि क्लेश काल के तुरन्त बाद सूर्य अंधेरा हो गया और समस्त पृथ्वी पर सुसमाचार की ज्योति बुझा दी गई। यहाँ परमेश्वर पृथ्वी के दुष्टों को दण्ड देना आरम्भ करते है और उन्हें अपने रसकुण्ड में पाँवों तले रौंदते है। आइये, हम लूका 13:24 में एक और वचन पढ़ें :

उस ने उन से कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।

नगर के द्वार कैसे है, स्मरण करें? उसमें सीधा और संकरा प्रवेश द्वार है। यह इतना संकरा है कि केवल परमेश्वर ही किसी को भीतर ला सकते हैं। मनुष्य स्वयं उसमें प्रवेश नहीं कर सकता, उसके लिये असंभव है, परन्तु वह मार्ग जो खुला था, वह परमेश्वर के उद्धार के द्वारा खुला था – आगे लूका 13:25 में लिखा है :

जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे, और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो?

यहाँ 'बाहर' वही शब्द है जिसे हम प्रकाशित वाक्य 14:20 में भी पाते हैं, जहाँ लिखा है – 'नगर के बाहर'। तब लूका 13:25–28 में आगे यह कहा गया है :

जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे, और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो? तब तुम कहने लगोगे, कि हम ने तेरे साम्हने खाया पीया और तू ने हमारे बजारों में उपदेश किया। परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूं, मैं नहीं जानता तुम कहां से हो, हे कुकर्म करनेवालो, तुम सब मुझ से दुर हो। वहां रोना और दांत पीसना होगा: जब तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे।

यहाँ 'बाहर' वही शब्द है जो प्रकाशित वाक्य 14:20 में नगर के बाहर है। हम समझ सकते हैं जो परमेश्वर यहाँ स्पष्ट रूप में कह रहे है। उन्होंने 21 मई 2011 को एक आत्मिक न्याय लाया और उन्होंने स्वर्ग का द्वार बन्द किया, फिर भी कुछ लोग जोर देकर कहते हैं कि यह असंथव है और वें जोर देकर कहते हैं कि परमेश्वर अब भी उद्धार कर रहा है। वे स्वयं को परमेश्वर के उस इच्छा के आधीन नहीं कर रहे और न स्वयं को दीन (विनम्र) कर रहे हैं क्योंकि उसने समस्त संसार में घोषणा की कि 21 मई 2011 को जब दरवाजा बन्द किया जायेगा तब उसकी उद्धार की योजना का अंत होगा। परन्तु वे अब भी जोर लगाकर कहते है, ''ओह, मैं अब भी यही हूँ, इसका अर्थ है कि परमेश्वर अब भी उद्धार कर रहे है।'' वे यह कहते हुये कि, ''हे प्रभु, हमें भीतर आने दे,'' अन्य दूसरों को भी उनके साथ स्वर्ग के दरवाजे पर आने और खटखटाने के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं। परन्तु परमेश्वर उन्हें अनुमति नहीं देंगे। वे उन्हें नहीं पहिचानते कि वे कहाँ के है, क्योंकि प्रभु पहले ही अपने प्रथम फलों को भीतर ले चुके है, और उसके अंतिम फल, वह भीड़ जो महाक्लेश के समय बचाई गई है, वे भी भीतर पहुँचाएं जा चुके है। अब फलों के लिये कोई 'समय और काल' शेष नहीं, इसलिये पता नहीं कि जो आ रहे हैं कहाँ से हैं, और उनकी विनती स्वीकार नहीं की गई, ''हे कुकर्म के करने वालों, मेरे पास से दूर हो जाओ।''

जब वे यह देखते और समझ जाते है कि बाईबल सिखा रही है, और परमेश्वर के लोग प्रचार कर रहे हैं कि परमेश्वर ने 'अब्राहम, और इसहाक, और याकूब और सभी भविष्यद्वक्ताओं' का उद्धार कर लिया है तब ''वहाँ रोना और दांत पीसना होगा।'' सभी भविष्यद्वक्ताओं में परमेश्वर के सभी लोग है, वे सभी, जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे है, और वे सभी बचा लिये जाएंगे, और उनके अतिरिक्त अन्य किसी के नाम, उस पुस्तक में नहीं है। अब और कोई शेष नहीं जिसकी खोज की जाये और जिसे उद्धार दिया जाये। इस कारण उद्धार न पाए लोग बाहर है और उनके 'रोने और दांत पीसने' का यही कारण है। यही उस क्रोध और प्रतिकार की भावना का कारण है जिसे कुछ लोग तब महसूस कर रहे है, जब उन्हें पता चला है कि 'याकूब' को आशीषें मिल चुकी है और उन्हें नहीं – वे एसाव है। उन्हें उनके हृदयों में पहिलौठे की आशीष नहीं मिली है, जैसे कि एसाव को नहीं मिली थी, वे अपने भाई याकूब की हत्या करने को आमादा (प्रतिबद्ध) है, वे उसके प्रति कड़वाहट से भरे हैं, और वे इतने अधिक क्रोध से भरे है कि सही तरह से सोच भी नहीं सकते। जो भी हो, तो ये सब बातें क्लेश के बाद आने वाले न्याय के दौरान होने वाली बातें है।

Revelation 14 Series, Study #52 by Chris McCann, originally aired October 22, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 52, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 22 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 52 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:20 अध्ययन करते आ रहे है :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

यह न्याय के दिन की एक काल्पनिक प्रतीकात्मक तस्वीर है, जो परमेश्वर कटनी के दिनों अर्थात् इस संसार की अंतिम 'आत्मिक कटनी' के संदर्भ में हमें दे रहे हैं। हम इससे समझ सकते हैं कि 'रसकुण्ड में रौंदा जाना' परमेश्वर के क्रोध की तस्वीर है। यशायाह की पुस्तक में प्रभु यीशु को रसकुण्ड में रौंदा गया जब उसने परमेश्वर के क्रोध का अनुभव किया। परमेश्वर ने उसी भाषा का उपयोग विलापगीत 1:15 में किया जबकि वे यहूदा के लोगों और सिय्योन की कुमारी कन्या को पाँवों तले रौदें जाने की बात कह रहे है, और यह कलीसियाओं पर आत्मिक न्याय को भी दर्शाता है। इस प्रकार, परमेश्वर के न्याय (दण्ड) के संबंध में हम इस प्रकार की भाषा से भली भांति परिचित है।

परन्तु प्रभु 'रसकुण्ड' से लोहू बहने की बात क्यों कहते हैं – (लोहू) ''घोड़ों की लगाम तक पहुँचा और सौ कोस तक बह गया"? हमें यह बताने के पीछे विचार क्या है? उन्होंने केवल इतना क्यों नहीं कहा – ''रसकुण्ड से लोहू निकला और बाहर गिरकर बह गया"? क्यों 'सौं कोस' (1600 फर्लांग्स) की दूरी का उल्लेख किया गया है? और क्यों वे 'कोस' शब्द का उपयोग करके लोहू बहने की दूरी बता रहे हैं?

हम इनमें से कुछ बातों को समझने का प्रयास करेंगे। मैं नहीं जानता कि हम उन्हें पूरी तरह समझ पाएंगे या नहीं? हम जानते है कि परमेश्वर ने कुछेक स्थलों में 'लोहू' शब्द का उपयोग करके बाईबल में इसकी परिभाषा दी है। उनमें से एक है, लैव्यव्यवस्था 17:11

क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है।

मैं एक टिप्पणी करना चाहता हूँ। इब्रानी शब्द 'जीवन' स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5315 (Neh-fesh) नेह–फेश है, और उसी पद में यही शब्द 'प्राण' (Soul) भी अनुवाद किया गया है, यह एक जैसे इब्रानी शब्द है और यही शब्द सबसे आरम्भ में उत्पत्ति 2:7 में भी उपयोग किया गया है :

और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।

लैव्यव्यवस्था 17:11 में आया शब्द 'प्राण' भी वही शब्द है, वहाँ लिखा है, शरीर का प्राण लोहू में रहता है और यह कहा जा सकता है – ''शरीर का जीवन लोहू में रहता है'' उनमें आपसी अदला–बदली संभव है। "और उसको मैंने वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित किया जाये, क्योंकि प्राण के कारण लहू से ही प्रायश्चित होता है।'' यहाँ अंत में आया "प्राण" शब्द भी मूलतः वही शब्द है।

तब आगे लैव्यव्यवस्था 17:12–14 में यह लिखा है :

इस कारण मैं इस्त्राएलियों से कहता हूं, कि तुम में से कोई प्राणी लोहू न खाए, और जो पर देशी तुम्हारे बीच रहता हो वह भी लोहू कभी न खाए॥ और इस्त्राएलियों में से वा उनके बीच रहने वाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो अहेर करके खाने के योग्य पशु वा पक्षी को पकड़े, वह उसके लोहू को उंडेलकर धूलि से ढांप दे। क्योंकि शरीर का प्राण जो है वह उसका लोहू ही है जो उसके प्राण के साथ एक है; इसी लिये मैं इस्त्राएलियों से कहता हूं, कि किसी प्रकार के प्राणी के लोहू को तुम न खाना, क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उनका लोहू ही है; जो कोई उसको खाए वह नाश किया जाएगा।

शब्द 'जीवन' जिसका उपयोग पद 14 में दो बार हुआ है, वही शब्द है। परमेश्वर ने बड़ी स्पष्टता के साथ जोर देकर शब्द 'लोहू' का संबंध 'जीवन' या मनुष्य के प्राण से बताया है। यही कारण है कि जब प्रभु यीशु ने प्रायश्चित में अपने प्राण दिये, उन्होंने अपना 'जीवन (लोहू) दिया। उन्होंने अपना लोहू बहाया और अपने प्राण (soul) अपने चुने हुये लोगों के पापों के बदले में दिया, और यही कारण है कि प्रभु यीशु मसीह ने प्रायश्चित का जो काम किया वह व्यवस्था के अनुसार न्याय की मांग को संतुष्ट करता था।

यही शब्द एक और स्थान, व्यवस्थाविवरण 12:23–24 में भी आया है :

परन्तु उनका लोहू किसी भांति न खाना; क्योंकि लोहू जो है वह प्राण ही है, और तू मांस के साथ प्राण कभी भी न खाना। उसको न खाना; उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना।

इसी के आधार पर, जब नये–नियम में (प्रेरितों के काम पुस्तक में) आरम्भिक कलीसिया यह तय कर रही थी कि नयी कलीसियाओं को कौन सी व्यवस्था दी जाये, उन्होंने उन्हें मूसा की व्यवस्था नहीं दी, परन्तु उनमें से कुछ नियम जो उन्होंने आज्ञा पालन के लिए दिये उनमें से एक लोहू से परे रहना था। प्रेरितों के काम 15:19–20 में यह लिखा है :

इसलिये मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें। परन्तु उन्हें लिख भेंजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें।

यह व्यवस्था, लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण में दी गई, उस व्यवस्था पर आधारित है जो हमने अभी कुछ देर पहले पढ़ी थी जिनमें कहा गया था कि 'शरीर' का प्राण 'लोहू' में होता है, और कोई भी लहू न खाए। यह कार्य मनुष्य के लिये मना है, क्योंकि इसमें एक महत्वपूर्ण आत्मिक तत्व है या लोहू की विशेषता है, और परमेश्वर यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि इस बात का उलंघन किसी प्रकार न हो। हमें इसमें यह समझने में कैसे सहायता मिलती है कि शरीर का जीवन या प्राण लोहू में है? आइये हम प्रकाशितवाक्य 14:20 में वापस आयें :

''और रसकुण्ड में से इतना लोहू निकला...''

और रसकुण्ड में कौन था? वे संसार के दुष्ट लोग थे। स्मरण रखें कि योएल 3 में क्या कहा गया है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य अध्याय 14, योएल 3:13 की व्याख्या है :

हंसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौंदो, क्योंकि हौज़ भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है॥

दुष्टता कौन करता है – दुष्ट लोग? वे दुष्ट लोग है, पृथ्वी पर रहने वाले, उद्धार न पाये हुये लोग, जो न्याय के दिन रसकुण्ड में डाले गये है। करोड़ो लोग परमेश्वर के क्रोध का शिकार है, और परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट में उन्हें रसकुण्ड में रौंद रहे हैं और उनका लोहू (उनका जीवन या उनका प्राण) कहा गया है कि रसकुण्ड में से उमड़ कर बाहर गिर रहा है और वह घोड़ों की लगाम तक पहुँचा और सौ कोस दूर तक बह गया।

हम इस विषय में क्या समझने का प्रयास कर रहे हैं? मेरा विचार है कि 'लोहू' का संकेत दुष्टों के जीवन से है, और ये दुष्ट एक निश्चित कालखण्ड में है, प्रकाशितवाक्य 19:15 में अंत के कथन को स्मरण करे, लिखा है –

''...सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में दाख रौंदेगा।''

वर्णन से लगता है (मानों) मसीह उस रसकुण्ड में पृथ्वी के सभी उद्धार न पाये हुओं के जीवन (या, लहू) को रौंदकर निकाल रहे हैं। उनका लोहू बाहर आ रहा है, परन्तु वे कहाँ है? वे अब भी रसकुण्ड में है, परन्तु उनका 'जीवन' या लोहू' बहकर बाहर निकल रहा है। मेरा विश्वास है कि यह तस्वीर दर्शा रही है कि वे जबकि परमेश्वर के क्रोध को भुगत रहे हैं, उनका जीवन बढ़ाया जा रहा है या उन्हें जीवित रखा जा रहा है। दुसरे शब्दों में, 'सौ कोस' (1600 फर्लोंग्स) अत्मिक अंक है जो "1600 दिनों" की ओर संकेत करता है, और 1600 दिन न्याय के दिन की अवधी होगी या उस समय की परिपूर्णता है जिस दौरान संसार के उद्धार न पाए हुए लोग परमेश्वर के क्रोध के अधीन है, इस बात की पूरी संम्भावना है। 'सौ कोस'(1600 फर्लोंग्स) पूरा होने के बाद लोहू का बहना रूक जाएगा।

वह (1600 फर्लोंग्स) से ज्यादा जैसे कि 1601 या उससे आगे नही बहता। कुछ देर बाद हम 'सौ कोस' पर चर्चा करेंगे कि उसका आशय क्या हो सकता है, परन्तु मेरा विचार है, रसकुण्ड से लोहू के बहने के वर्णन और घोड़ों की लगाम तक पहुँचने के पीछे परमेश्वर का अभिप्राय यही है कि वे रसकुण्ड में जीवित है।

'घोड़े की लगामों' भी एक असामान्य तस्वीर है। परमेश्वर ने जो भी बातें कहीं या कह सकते थे, उन्होंने ऐसा क्यों नहीं कहा कि 'रसकुण्ड से लोहू निकलकर यरूशलेम तक बह गया, या 'परमेश्वर के संतों तक पहुँचा?' क्यों उन्होंने 'घोड़े की लगामों' शब्द को चुना? क्यों यहाँ 'घोड़ा' शब्द (एक वचन) है, परन्तु लगामों शब्द (बहुवचन) में है? और यह लगामों तक की दूरी का क्या अर्थ है? क्यों 'सौ कोस' (1600 फर्लोंग्स) की दूरी बताई गई है जिसका हम केवल एक अर्थ निकाल सकते हैं कि यह 'सौ कोस' की दूरी रसकुण्ड और 'घोड़े की लगामों' के बीच की दूरी है?

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हम हर बात को पूरी तौर पर समझ जाएंगे, परन्तु इन बातों को समझने के लिये हम वहीं करेंगे जो हम सदैव करते आये हैं – हम बाईबल में खोज करेंगे और इन शब्दों से मिलते–जुलते शब्द और वृतान्त खोजेंगे, और बाईबल के अनुरूप तस्वीर को पूरा करने और समझने का प्रयास करेंगे, और हम परमेश्वर को अवसर देंगे कि जब हम पदों को आपस में मिला–मिलाकर देखते और समझते हैं, तब वे हमें निर्देश दे और समझ प्रदान करे।

हम जानते हैं कि न्याय के दिन मसीह अकेले नहीं आयेंगे। वे पृथ्वी के न्यायी है, और हम बाईबल में बार–बार पढ़ते हैं कि वे अपने 'दस हजार संतों के साथ' आते हैं। मसीह अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आते हैं और इसका अर्थ है कि वे अपने सभी 'पवित्र–संदेशवाहकों' के साथ आते हैं, क्योंकि शब्द – 'स्वर्गदूत' का अनुवाद 'संदेशवाहक' किया जाना चाहिये। परन्तु प्रकाशितवाक्य 14 में केवल मसीह का ही वर्णन है जो बादलों पर बैठा है, और वह जो रसकुण्ड को रौंद रहा है। परन्तु यदि हम प्रकाशितवाक्य 19 पढ़ें, प्रकाशितवाक्य 19:14 में यह लिखा है :

और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है।

वे सब परमेश्वर के चुने हुये लोग अर्थात् उसके संत है। तब प्रकाशितवाक्य वाक्य 19:15 में यह लिखा है :

और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।

इस प्रकार, यहाँ भी यीशु रसकुण्ड को अकेले रौंद रहे हैं, परन्तु संत कहां है? वे घोड़ों पर सवार है – स्वर्ग की सेना उसके पीछे–पीछे श्वेत घोड़ों पर सवार है। वे गवाह है और सहकर्मी हैं, इस अर्थ में कि वे परमेश्वर के साथ सहमति रखते हैं और परमेश्वर के धर्ममय न्याय के समर्थक हैं, वे मानते है कि परमेश्वर की व्यवस्था सिद्ध है, उसे संतुष्ट किया जाना चाहिये, इस कारण, जब मसीह रसकुण्ड को पैरो तले रौंदना आरम्भ करते हैं, जिसमें पृथ्वी के सभी उद्धार न पाये हुये लोग है, तब वे मसीह के साथ है, प्रकाशितवाक्य 19 में जो तस्वीर दी गई है उसके अनुसार परमेश्वर की सेना (लगभग 20 करोड) महिमामय श्वेत घोड़ों पर सवार है, और यह संकेत दिया गया है कि परमेश्वर के लोग निष्कलंक और निष्पाप हैं – स्वर्ग की सेना श्वेत और शुद्ध मलमल का वस्त्र पहने हैं। वे सब मसीह की धार्मिकता के वस्त्रो से ढकें हुए है, इस कारण, बिना पाप के है, वे मसीह के द्वारा कार्य समाप्त करने, पृथ्वी का न्याय और फसल की कटनी पूरी करने की प्रतीक्षा कर रहे है जबकि मसीह रसकुण्ड में दुष्टों को रौंद रहे हैं। हम प्रकाशितवाक्य 19 और प्रकाशितवाक्य 14:20 के बीच संबंध देख सकते हैं कि लोहू उमड़कर रसकुण्ड से बाहर बह निकला और 'घोड़े की लगामों' तक पहुँचा, अर्थात् वहाँ जहाँ परमेश्वर के चुने हुये बैठे हैं। मैं समझता हूँ कि इसे समझने का यह एक तरीका है। हम जानते हैं कि मसीह ने हमें बहुत बार बताया है कि उसके लोग न्याय करने उसके साथ आएंगे और उन्हें कुछेक स्थानों पर 'घोड़ों' या 'घुड़सवारों' के समान बताया गया है। योएल 2:2 में यह लिखा है :

वह अन्धकार और तिमिर का दिन है, वह बदली का दिन है और अन्धियारे का सा फैलता है। जैसे भोर का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है, वैसे ही एक बड़ी और सामर्थी जाति आएगी; प्राचीनकाल में वैसी कभी न हुई, और न उसके बाद भी फिर किसी पीढ़ी में होगी॥

ये परमेश्वर के लोग है और योएल 2:4–5 में उनका वर्णन किया गया है :

उनका रूप घोड़ों का सा है, और वे सवारी के घोड़ों की नाईं दौड़ते हैं। उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का, वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का, था जैसे पांति बान्धे हुए बली योद्धाओं का शब्द होता है॥

बाईबल हम पर प्रगट करती है कि दुष्ट खूंटी के समान है। कौन है जो इन खूंटियों को जलाता है? ओबद्याह 1:18 में लिखा है :

तब याकूब का घराना आग, और यूसुफ का घराना लौ, और ऐसाव का घराना खूंटी बनेगा; और वे उन में आग लगा कर उन को भस्म करेंगे, और ऐसाव के घराने का कोई न बचेगा; क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है॥

याकूब और यूसुफ सच्चे विश्वसीजनों या परमेश्वर के संतों की तस्वीर है और एसाव उनको दर्शाता है जिनका उद्धार नहीं हुआ है, और वे चुने नहीं गये। जैसे कि याकूब चुना गया, परन्तु एसाव चुना नहीं गया। योएल अध्याय 2 में एक बड़ी सेना है जो दुष्टों को जला रही है। यह सेना आग की ज्वाला के समान है, वह खूंटियों को भस्म करती जाती है, जैसा कि याकूब और यूसुफ की तस्वीर में बताया गया है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 9 में, हम जानते है कि न्याय के दिन का वर्णन किया जा रहा है – और 'तीन हाय' वास्तव में घट रही है और प्रभु न्याय के दिन में टिड्डियों के आने के विषय में कहते हैं, ये टिड्डियाँ परमेश्वर की विशाल सेना है। वे सच्चे विश्वासियों की प्रतीक है, प्रकाशितवाक्य 9:7 में लिखा है :

और उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के से थे, और उन के सिरों पर मानों सोने के मुकुट थे; और उसके मुंह मनुष्यों के से थे।

टिड्डियों को घोड़ों के समान बताया गया है, तब थोड़ा आगे प्रकाशितवाक्य 9 में चुने हुओं को 20 करोड़ बताया गया है। प्रकाशितवाक्य 9:16–18 में यह लिखा है :

और फौजों के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी; मैं ने उन की गिनती सुनी। और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उन के ऐसे सवार दिखाई दिए, जिन की झिलमें आग, और धूम्रकान्त, और गन्धक की सी थीं, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के से थे: और उन के मुंह से आग, और धुआं, और गन्धक निकलती थी। इन तीनों मरियों; अर्थात आग, और धुएं, और गन्धक से जो उसके मुंह से निकलती थीं, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई।

इस प्रकार, 'घोड़े' और 'घुड़सवार' दोनों ही परमेश्वर के चुने हुओं को दर्शाते है। जी हाँ, परमेश्वर अपनी प्रजा के लिये यही भाषा प्रयोग करते है। वे उन्हें 'घुड़सवार' कहते है। परन्तु वे उन्हें 'घोड़े' भी कहते है। जकर्याह 10:3 में भी यही कहा गया है :

मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़का है, और मैं उन बकरों को दण्ड दूंगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने झुण्ड अर्थात यहूदा के घराने का हाल देखने का आएगा, और लड़ाई में उन को अपना हृष्टपुष्ट घोड़ा सा बनाएगा।

परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 9 में भी यही तस्वीर उपयोग कर रहे है, जहाँ बीस करोड़, घुड़सवारों की चर्चा है जो सन्तों के प्रतीक है। और घोड़ों के मुँह से आग, धुंआ और गंधक निकल रहे हैं, यह भी परमेश्वर के संतों की तस्वीर है। यही कारण है कि प्रकाशितवाक्य 14:20 में घोड़ा (एक वचन) प्रयुक्त हुआ है, वहाँ लिखा है – और रसकुण्ड से इतना लहू निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँचा। किन्तु लगामों का बहुवचन है, और यह इसलिये

है कि 'घोड़ा' (एक वचन) प्रभु यीशु मसीह की देह को दर्शाता है। परमेश्वर इस प्रकार की व्याख्या याकूब की पत्री में भी देते है। याकूब 3:1 में यह लिखा है :

हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।

मुझे लगता है – 'सिद्ध मनुष्य' का संदर्भ 'प्रभु यीशु' से है। तब आगे याकूब 3:2 में कहा गया है :

"और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है।"

मसीह ने चुने हुओं के द्वारा अपनी देह की संरचना की है। वह स्वयं सिर है और उसने देह के अंग चुने हैं, वे जो उसके द्वारा बचाए गए है, वे उसकी देह के अंग बन गये है। यहाँ परमेश्वर लगाम शब्द का उपयोग करते हैं जो स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5468 है, और प्रकाशितवाक्य 14:20 में प्रयुक्त हमारे शब्द स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5469 से संबंधित है, और यह शब्द याकूब 3:3 में उपयोग किया गया है :

जब हम अपने वश में करने के लिये घोड़ों के मुंह में लगाम लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी फेर सकते हैं।

हमारी इस पद में प्रयुक्त शब्द 'लगाम' (bits) वास्तव में लगाम का बहुवचन है। अब आगे परमेश्वर जहाज की चर्चा करते है, और छोटी सी पतवार की बात करते हैं जिससे जहाज चलाये जाते हैं, वे उसको जीभ के समान बताते है जो एक छोटा सा अंग है। स्मरण रखें कि 'सिद्ध मनुष्य' पूरे शरीर पर लगाम लगा सकता है। यहाँ विचार यह है कि मसीह अपने लोगों के मुख में लगाम लगाते है और उन्हें अपनी इच्छा के पूर्ण नियंत्रण में रखते हैं ताकि वे उन कामों को करे जिन्हें परमेश्वर उनसे चाहते है, वे हमें उनकी भली इच्छा और खुशी के लिये कार्य करने की इच्छा और कार्य की शक्ति देते है।

यद्यपि यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आती है, और मैं यह मानता हूँ, पर यह शब्द 'लगाम' बाईबल में बहुत बार उपयोग नहीं हुआ है, पर यहाँ सम्पूर्ण देह पर नियंत्रण के संदर्भ में उपयोग किया गया है। यह जहाज पर पतवार के द्वारा नियंत्रण और घोड़ों पर लगाम के द्वारा नियंत्रण के संदर्भ में आया है। हम जानते है कि 'जहाज' कलीसिया को दर्शाते है और यह कलीसियाओं की शिक्षा है जिसके आधार पर कलीसियाई देह अपनी दिशा और क्रिया तय करती है, मेरा सोचना है कि यहाँ मूल रूप में यही विचार है।

इसलिये जब हम पढ़ते हैं कि लोहू बहकर घोड़े की लगामों तक पहुँचा, तब यह परमेश्वर का घोड़ा है और जो वर्णन वे प्रकाशितवाक्य 14 में देते हैं वह परमेश्वर के चुने हुओं की ओर संकेत करता है। चूंकि यहाँ सभी चुने हुए लोग है इसलिये लगाम बहुवचन में है।

परमेश्वर के लोगों के मुँह में लगामें हैं क्योंकि हम सबके सब परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे है; हम उसकी सेवा करने की इच्छा रखते हैं। वह प्रभु है और हम उसे समर्पण करते है, हम उसके सामने और उसकी इच्छा के सामने टूटे और पिसे मनवाले है।

Revelation 14 Series, Study #53 by Chris McCann, originally aired October 23, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 53, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 23 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 53 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:20 पर चर्चा कर रहे हैं :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

हम पिछले कुछ अध्ययनों से इस पद पर चर्चा करते आये हैं, और हमने उन सब बातों को देखा कि बाईबल इस विषय में क्या कहती है, हम प्रकाशित वाक्य के पुस्तक में एक–एक करके पदों को देखते आ रहे है।

सबसे पहले, हम इस सोच में पड जाते है कि 'सौ कोस' किसका प्रतिक है। 'सौ कोस' (1600 फर्लोंग्स) क्या है, परमेश्वर सौ कोस की बात क्यों कहते हैं? बाईबल में इस शब्द का अर्थ निकालने के लिये हमें बाईबल का तरीका अपनाकर पवित्रशास्त्र के वचनों को मिला–मिलाकर देखना होगा, जबकि हम इस शब्द पर विचार करते हैं, यह देखना होगा कि बाईबल के अन्य स्थलों में यह शब्द 'कहाँ' और 'कैसे' उपयोग में आया है।

यह शब्द 'कोस' (Furlong) ग्रीक भाषा में 'स्टेडियन' (stadion) स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 4712 है। यह बड़ा रोचक शब्द है। यह शब्द नये–नियम में केवल छह बार आया है, और पाँच बार इसका अनुवाद 'कोस' (Furlong) किया गया है, और एक बार इसका अनुवाद 'दौड़' किया गया है। मैं चाहता हूँ कि हम जहाँ–जहाँ 'कोस' शब्द आया है, उन सभी स्थलों पर विचार करे।

सबसे पहले आइये हम लूका 24:13 देखे :

देखो, उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था।

यहाँ 60 फर्लांग का वर्णन है जो लगभग सात मील के बराबर है, प्रभु के दो चेले इस वृतान्त में इम्माऊस के मार्ग पर चल रहे थे जबकि उस समय यीशु क्रूस पर मृत्यु पा चुके थे। वे आपस मे ंबातचीत कर रहे थे और लूका 24:14–15 के अनुसार :

और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं, आपस में बातचीत करते जा रहे थे। और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया।

संभावना है कि वे अपने गृहनगर इम्माऊस जा रहे थे जो यरूशलेम से 60 फर्लांग (सात मील) दूर था। जब वे चलते जा रहे थे, यीशु उनके साथ हो लिया (उसका पुनरूत्थान हो चुका था) और यह प्रभु के साथ उनकी चर्चा का अद्भुत ऐतिहासिक वर्णन है कि प्रभु ने कैसे उनकी आँखें खोली ताकि वे पवित्रशास्त्र की बातें समझ सके। परन्तु हम जिस शब्द में रूचि रखते है, वह शब्द फर्लांग (कोस) है। यहाँ दूरी 60 फर्लांग या सात कोस की है, और यह यरूशलेम से इम्माऊस के बीच की दूरी है।

दूसरी बार हम यह शब्द 'फर्लांग' यूहन्ना 6:19 में पाते है :

सो जब वे खेते खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए।

यहाँ भी यह शब्द 'दूरी' के लिये आया है और विचार यह है कि जब उन्होंने नाव खेना आरम्भ किया – वे 25 से 30 फर्लांग (तीन चार मील) तब खेते चले गये। परमेश्वर ही जानते थे कि वे वास्तव में कितनी दूर जा चुके थे, फिर उन्होंने क्यों कहा – 'तीन–चार मील के लगभग'? इसका कारण यह है कि वे हमें दोनों अंक देना चाहते थे क्योंकि उनका आत्मिक अर्थ है। 25 का अंक 5 X 5 है और 30 के अंक के 3 X 10 या 2 X 5 X 3 भाग पड सकते है, और इस प्रकार यहाँ प्रभु जो कह रहे हैं, उसका 25 या 30 इन अंकों का आत्मिक अर्थ हो सकता है। एक बार फिर यहाँ फर्लांग का आशय दूरी से है। उन्होंने खेना आरम्भ किया, वे 25 या 30 फर्लांग तक गये, जब उन्होंने पानी पर चलते हुये प्रभु यीशु मसीह को देखा। इस प्रकार, शब्द फर्लांग के संबंध में, हम दो–बार मसीह का प्रगट होना देखते है। पहली बार इम्माऊस के मार्ग पर चेलों के साथ और दूसरी बार जब चेले नाव खे रहे थे। दोनों ही बार मसीह ने उनसे तब मुलाकात की जब यात्रा की दूरी 'फर्लांग' में बतायी गई है।

साथ ही लाजर की मृत्यु के वृतान्त में, यूहन्ना 11:17–20 में भी यह शब्द आया है।

सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था। और बहुत से यहूदी मारथा और मरियम के

पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे। सो मारथा यीशु के आने का समचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।

यह एक महत्वपूर्ण घटना है, प्रभु यीशु लाजर को मृतकों में से जिलाने पर थे। वे यह काम बैतनिय्याह में करने वाले थे जो कि यरूशलेम के समीप लगभग पन्द्रह फर्लांग (दो मील) की दूरी पर था। हम देख सकते हैं कि इम्माऊस के सापेक्ष यह दूरी काफी कम थी – वह लगभग 60 फर्लांग दूर था (लगभग 7 मील)। स्मरण रखिये कि उन दिनों यहूदी लोग यरूशलेम के आसपास के गाँवों में रहते थे और अकसर पवित्र नगर में आना–जाना करते थे, यरूशलेम आराधना का केन्द्र स्थल था, और परमेश्वर की आज्ञा थी कि 'नियत पर्वों के समय वे यरूशलेम जाकर आराधना किया करे।' इसलिये इस प्रकार की यात्राएं करना उनके लिये आम बात थी, क्योंकि दूरियाँ अधिक नहीं थी और लोग यात्रा करने के आदी थे। आज हम उतना अधिक यात्राएं नहीं करते हैं क्योंकि हमारे पास गाडियाँ है और यातायात के अन्य साधन है, परन्तु पुराने दिनों में वे लोग बहुत अधिक पद यात्राएं करते थे, और बैतनिय्याह यरूशलेम के काफी नजदीक था। ध्यान दे कि हमें यरूशलेम और बैतनिय्याह के बीच की दूरी पन्द्रह फर्लांग बताई गई है, और संदर्भ में हम पढ़ते हैं कि मार्था यीशु से मिलती है। इस प्रकार, यह तीसरी बार फर्लांग का संदर्भ है जब कोई चेला यीशु से मिला।

चौथी बार फर्लांग शब्द हम प्रकाशितवाक्य 21 में पाते हैं, यह एक महिमामय अध्याय है जिसमें परमेश्वर स्वर्गीय यरूशलेम अर्थात् परमेश्वर के नगर का वर्णन करते है जो परमेश्वर के बचाए हुये (उद्धार पाये हुये) लोगों से बनी है। इस कारण, जब हम इस महिमामय नये यरूशलेम के बारे में पढ़ते हैं तब यह परमेश्वर के उद्धार के एक पहलू या परमेश्वर के चुने हुओं का वर्णन कर रही है। प्रकाशितवाक्य 21:14–16 में यह लिखा है :

और नगर की शहरपनाह की बारह नेवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे। और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उस की शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उस की लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी, और उस ने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उस की लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊंचाई बराबर थी।

परमेश्वर का नगर वे सब लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है, और उस नगर को नापा तो वह 'बारह हजार फर्लांग' (साढ़े सात सौ कोस) निकला। 12,000 यह अंक परमेश्वर के चुने हुओं की संम्पूर्ण संख्या की ओर संकेत करता है क्योंकि "10" परिपूर्णता का प्रतिक है और "12" पूरी संख्या का प्रतिक है; इस प्रकार, जितनों के नाम मेम्नें के जिवनी किताब में लिखें है यह उन सब की पूरी संख्या है। एक बार फिर हम देखते हैं कि शब्द फर्लांग (कोस) एक बहुत महत्वपूर्ण शब्द है, और वह परमेश्वर के सम्पूर्ण उद्धार के

कार्यक्रम के महत्वपूर्ण या प्रमुख भागों के साथ जुड़ा है – प्रभु यीशु मसीह और यरूशलेम (इम्माऊस से यरूशलेम की दूरी या बेतनिय्याह से यरूशलेम की दूरी)। एक अपवाद तब है जब चेले झील में थे, उसमें यह दूरी इतनी थी, जितनी वे प्रभु से मिलने से पहले खे चुके थे। और यहाँ प्रकाशितवाक्य 21 में नये यरूशलेम का नाप 'बारह हजार फर्लांग' (साढ़े सात सौ कोस) है, इस कारण अवश्य ही फर्लांग (कोस) का संबंध परमेश्वर के सम्पूर्ण उद्धार के कार्यक्रम से है, क्योंकि यरूशलेम उनको दर्शाता है जिनका परमेश्वर ने उद्धार किया है। इस प्रकार, यह चौथी बार है जब फर्लांग (कोस) का वर्णन आया है। पाँचवी बार इस शब्द का उल्लेख हमारी पद प्रकाशितवाक्य 14:20 के अंतिम भाग में है।

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

इस प्रकार, यह वह दूरी है जिसमें रसकुण्ड से निकलकर लहू घोड़े की लगामों तक पहुँचा था। और इस प्रकार पाँच बार यह शब्द फर्लांग (कोस) के रूप में अनुवाद किया गया है। हम यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि हमारी पद में इसका क्या अर्थ है। लहू के बहने के अंत में, इन सौ कोस (1600 फर्लोंग्स) के अंत में क्या हो सकता है?

यदि आप ई–बाईबल फेलोशिप के बाईबल अध्ययनों को पढते या सुनते आ रहे है तो आपको पता चलेगा कि हम इन "1600 फर्लोंग्स" की ओर "1600 दिनों" के रूप में देखते आ रहे है क्योंकि न्याय का दिन कटनी का समय है और साथ ही वह भी समय है जब प्रभू यीशु ने रसकुण्ड को रौंदना आरंम्भ किया। इसका आरम्भ 21 मई 2011 को हुआ और 1600 दिनों के बाद 7 अक्तुबर 2015 है जो कटनी के दिन का अंतिम दिन है और यह उसी साल के इब्रानी सातवें महिने में आने वाले झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन है। यह न्याय के दिन की पूरी होने की तीथि है इस बात की भी पूरी संम्भावना है क्योंकि जब हम 8400 दिनों में 1600 दिनो को मिलाते है तो यह 10,000 दिन बनते है और इस प्रकार 7 अक्तुबर 2015 न्याय के दिन का 10,000 वा दिन भी है क्योंकि 21 मई 1988 को परमेश्वर के घर से न्याय का आरंम्भ हुआ। न्याय को पूरा करने परमेश्वर के लिए यह उत्तम दिन है जिसका आरम्भ कलीसियाओं पर हुआ था, जो 21 मई 2011 को संसार की ओर मुडा। जब परमेश्वर दण्ड देने का यह कार्य पूर्ण करेंगे, तब दुष्टों को दण्ड देने का कार्य – कलीसियाओं के भीतर और बाहर पूरा हो जायेगा। एक बार वे न्याय पूरा करने के बाद, वे संसार को नष्ट करेंगे और एक नया आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि करेंगे। उस समय 'नया यरूशलेम' स्वर्ग से उतरेगा, परमेश्वर के पास से, और परमेश्वर के लोगों का अनंतकालीन भविष्य आरम्भ होगा, तब समय नहीं होगा और हम अनंत भविष्य में प्रवेश कर जाएंगे। वह मसीह से मिलने और नये यरूशलेम में प्रवेश करने का समय होगा, और फर्लांग न्याय के दिन के आरंभ से लेकर नये आकाश और नयी पृथ्वी में प्रवेश करने और परमेश्वर से आमने सामने मुलाकात करने तक की दूरी होगी।

एक और स्थल देखिए, जहाँ नये नियम में फर्लांग शब्द पाया जाता है एक बार फिर यह ग्रीक शब्द Stadion है और यह 1 कुरिन्थियों के 9 वें अध्याय में एक रोचक संदर्भ के साथ आता है। 1 कुरिन्थियों 9:24–27 में यह लिखा है :

क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥

1 कुरिन्थियों अध्याय 9 इसके बाद समाप्त होता है – इसमें ग्रीक शब्द Stadion कहाँ है जिसे अन्य सब स्थानों में 'फर्लांग' अनुवाद किया गया है? यह पद 24 में है : "क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ते तो सब ही है'', यहाँ हमारा शब्द 'दौड़' अनुवाद किया गया है, परन्तु इसका अनुवाद फर्लांग (कोस) होना चाहिये था। तब यह इस प्रकार होता – 'क्या तुम नहीं जानते कि फर्लांग (कोसों तक की दौड) में दौड़ते तो सब ही है, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है?'' यहाँ परमेश्वर संकेत कर रहे हैं कि फर्लांग को दौड़ भी समझा जा सकता है, यहाँ तक कि ग्रीक शब्द Stadion जिसका अनुवाद फर्लांग किया जाता है, उसी से हम अंग्रेजी का शब्द 'स्टेडियम' (Stadiam) पाते है। स्टेडियम में खेल कूद होते हैं, विशेषकर दौड़ें दौड़ी जाती है (अन्य खेल भी होते है), लोग स्टेडियम में बैठकर ओलम्पिक के खेल स्पर्धायें देखते हैं, उदाहरण के लिये यह कि खिलाड़ी पुरुस्कार (मुकुट) पाने के लिये प्रतिस्पर्धा करते हैं। कौन स्वर्ण पदक लेगा और कौन रजत या कांस्य लेकर जायेगा? हमारा शब्द 'स्टेडियम' ग्रीक शब्द Stadion से निकला है, और हम देख सकते हैं कि इसका अधिक संबंध दौड़ने से है, क्योंकि बहुत सी प्रतिस्पर्धाएं दौड़ने से जुड़ी होती है। वास्तव में लगभग सभी खेलों में दौड़ना पड़ता है जैसे बास्केट बॉल, फुटबाल, बेसबाल इत्यादि। कुछ अपवाद भी हो सकते हैं पर अधिकतर में दौड़ शामिल हैं : ''क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ते तो सब ही है परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो।" इस प्रकार, परमेश्वर का वचन हमें दिशा निर्देश दे रहा है कि हमें कोसो दौड दौड़ना चाहिये। और क्यों दौड़ना चाहिये? ताकि हम इनाम जीते। और इनाम क्या है? 1 कुरिन्थियों 9:25 में लिखा है :

और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है.....।

यह संसार में खिलाड़ियों के लिये बहुत ही सत्य है। हम सबने कहानियाँ सुनी है कि कैसे वे स्वयं को कुछ भोजन वस्तुओं, मिठाईयों और अन्य वस्तुओं से दूर (वर्जित) रखते है। वे बहुत अनुशासन में रहते और अभ्यास पर अभ्यास करते जाते हैं, वे अपने शरीरों पर नियंत्रण करने का प्रशिक्षण लेते है क्योंकि वे स्पर्धा में सर्वोत्तम ठहरना और स्वर्ण–पदक प्राप्त करना चाहते है। वे विजेता बनना चाहते है, वैसा व्यक्ति जो प्रथम पुरूस्कार जीत कर घर ले आये। इस प्रकार, परमेश्वर इस उदाहरण के द्वारा समझा रहे हैं और बाहरी तौर पर इसमें अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। यह एक प्राचीन उदाहरण है क्योंकि ये बातें प्रथम शताब्दी में लिखी गयी थी, परन्तु यह आज हमारे आधुनिक युग में भी उतनी ही उपयुक्त है। ऐसा लगता है कि आधुनिक पीढ़ी जीतने के लिये और भी अधिक दृढ़ संकल्प करती है, वे इस सीमा तक जाते हैं कि धोके बाजी भी करते हैं, स्टेरायड का सेवन करते और अन्य अनुचित साधनों का प्रयोग करते है। उनकी अदम्य इच्छा और पदक जीतने की लालसा में वे कुछ भी करने तैयार है। परमेश्वर उनकी ओर संकेत करके कहते हैं – ''हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है।'' वे धूम्रपान नहीं करते, मदिरापान नहीं करते, आवश्यकता से अधिक भोजन नहीं करते, और वे वास्तव में अपनी देह को वश में रखते हैं।

आगे समझाया गया है कि वे ऐसा क्यों करते है। 1 कुरिन्थियों 9:25 के दूसरे भाग में लिखा है –

"वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये...।''

यह सत्य है। ''एम.वी.पी. पुरूस्कार'' या विजेता की पदवी, या स्वर्ण–पदक इत्यादि तात्कालिक होते है, कुछ वर्षो के बाद लोग उन्हें भूल जाते है। लोग अधिकतर स्मरण नहीं रखते कि 30 वर्ष पूर्व किसने स्वर्ण–पदक जीता था। यह ऐसा वस्तू है जो संसार की इस सारी महिमा के समान लुप्त हो जाती है। बाईबल इस विषय में कहती है – घास के फूल के समान, क्योंकि वह आज है और कल सूख जाता है। इस प्रकार, मनुष्य कितना अधिक परिश्रम करते हैं कि वे स्पर्धा में इनाम जीतें और जय का यश गान उन्हें मिले और उन्हें उनके साथियों से अधिक बढ़कर सम्मान मिले और वे मंच पर खड़े हो, परन्तु यह मुरझाने वाला मुकुट है। अंत में यह अपनी चमक खो देता है। 'सुपर बॉल रिंग' चोरी हो सकता है, समय के साथ वह उनसे गुम हो सकता है। समय उनके मुकुट को बर्बाद कर सकता है, इसलिये वह एक 'मुरझाने वाला मुकुट' है, और सबसे अंत में उनकी मृत्यु होगी और तब वे अपने स्वर्णपदक को अपने साथ लेकर कब्र में नहीं जा सकते। यदि उनका उद्धार नहीं हुआ है तो वे मिट जाएँगे। यह एक क्षणिक या तात्कालिक यश है और कुछ समय के लिए है। परन्तु परमेश्वर आगे 1 कुरिन्थियों 9:25 में कहते है :

.....जो मुरझाने का नहीं।

अब परमेश्वर चुने हुओं की चर्चा कर रहे हैं। वे तुलना कर रहे हैं। एक ओर संसार को देखो, उनकी स्पर्धाएं, और वे एक सांसारिक ईनाम को प्राप्त करने के लिये क्या कुछ करने के लिये तैयार है, जो कि एक अपेक्षाकृत अति निम्नकोटि का ईनाम है। इसकी तुलना उससे नहीं की जा सकती जो परमेश्वर देंगे, परमेश्वर यहाँ तात्कालिक और सर्वकालिक के बीच तुलना करते हैं, 2 कुरिन्थियों 4:17–18 में हम पढते है :

क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

अनंतकालीन बातें ''बहुत सी महत्वपूर्ण और अनंत महिमा'' की है। यदि 'पोल–वॉल्ट' में या 100 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीतना एक बड़ी और अद्‌भुत बात है, तो अनंतकालीन वस्तुओं को पाना कितनी अधिक महिमा की बात है? हम अंकों में यह महिमा नहीं बता सकते कि वह कितनी बड़ी है कि परमेश्वर की संतान बनना और अनंत जीवन दिया जाना, और संसार के अंत में परमेश्वर की योजना के अनुसार सदा बना रहने वाला इनाम पाना कितना अधिक महिमामय है। वही ईनाम यहाँ है, कुछ दूरी पर, और परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी हैं कि हम दौड़ें और ईनाम जीते। स्मरण कीजिये कि फिलिप्पियों 3:10–14 में क्या लिखा है :

और मैं उस को और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी हाने के मर्म को जानूँ, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं। यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

ईनाम यहाँ हमारे सामने है और हमसे बहुत अधिक दूर नहीं है। परमेश्वर इस समय तक अपने सभी लोगों का उद्धार कर चुके है और जैसा कहा गया है कि ''आपको ईनाम के लिये दौड़ना होगा'', आप को अपनी ऊँची बुलाहट के अनुसार जो परमेश्वर ने मसीह यीशु में दी थी, निशाने की ओर आगे बढ़ते जाना है। दौड़ में दौड़िये। उस फर्लांग को दौड़े जो आपके सामने दौड़ने के लिये रखा है और आत्मिक जगत में उसे इस प्रकार दौड़े कि आप यह सुनिश्चित करे कि ईनाम आप को ही मिले, क्योंकि यह 'बहुत ही महत्वपूर्ण और अनंत

महिमा' से भरपूर है और दौड़ की अंतिम रेखा पर आपके लिये प्रतीक्षा करता है। वह मुकुट जो आपके सिर पर रखा जायेगा, वह केवल उस एक दिन के लिये नहीं होगा, जब सब लोग खड़े होकर तालियाँ बजाएंगे और आपके नाम की सराहना करेंगे, यह एक दिन एक सप्ताह और एक महीने के लिये नहीं होगा। वह केवल कुछ वर्षों के लिये नही होगा कि लोग ओलम्पिक के स्वर्णपदक विजेता के रूप में आपका आदर करे, पर यह महिमा कभी मुरझाने की नहीं। यह महिमा अनंतकाल की है, यह सदा–सदा तक बनी रहेगी, अनंत भविष्यकाल में यह आपके और परमेश्वर के सभी लोगों के सामने बनी रहेगी।

Revelation 14 Series, Study #54 by Chris McCann, originally aired October 24, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 54, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 24 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 54 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:20 अर्थात अंतिम वचन पर चर्चा कर रहे हैं :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

ळमारे पिछले अध्ययन में हम ग्रीक शब्द Stadion पर विचार कर रहे थे, जिसे फर्लांग (कोस) अनुवाद किया गया है, और हमने देखा कि यह बाईबल में छः बार आया है। हमने हर स्थल को पढ़ा, जहाँ यह शब्द आया था, पाँच बार इसका अनुवाद फर्लांग (कोस) है और एकबार 'दौड़' अनुवाद किया गया है। मैं वापस उसी वृतान्त को पढ़ना चाहता हूँ, जहाँ Stadion का अनुवाद दौड़ (Race) किया गया है, 1 कुरिन्थियों 9:24–27 में हम पढते है :

क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥

यहाँ पर मुख्य बात जो है वह यह कि यह पद फर्लांग (कोस) तक दौड़ने के विषय में कहता है ताकि इनाम पा सके, जिस इनाम को परमेश्वर ने 'न मुरझाने वाला मुकुट' कहा है। जैसे ही हम शब्द 'न मुरझाने वाला' पर ध्यान देते हैं, हम जान लेते है कि यहाँ अनंतकालीन जीवन की चर्चा की जा रही है – परन्तु आइये हम उस शब्द का अध्ययन करे जिसे 'न मुरझाने वाला' अनुवाद किया गया है, और हम कुछ अन्य स्थलों को देखेंगे, जहाँ यह शब्द उपयोग किया गया है – 1 पतरस 1:4 में यह लिखा है :

अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।

ध्यान दीजिये कि मीरास अविनाशी और निर्मल (निष्कलंक) और अजर (न मुरझाने वाली) है, और ठीक यही विचार परमेश्वर 1 कुरिन्थियों 9 में व्यक्त करते है, जहाँ एक मुकुट की प्राप्ति है पर वह नाशमान और मुरझाने वाला है। ध्यान दीजिये कि कहा जा रहा है, यह मुकुट ''जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखा है'' इसका अर्थ यह है कि यह केवल आत्मा का उद्धार ही नहीं है, क्योंकि जब हम पृथ्वी पर हैं परमेश्वर अपने लोगों को नया हृदय और नयी आत्मा देते है और यह उद्धार का महिमामय और अद्‌भुत भाग है जो परमेश्वर ने अपने 'चुने हुओं' को सेंतमेत दिया है, परन्तु वास्तव में यह 'बयाने की रकम' (down payment) या 'आत्मा का अग्रिम' है और शेष अभी आना बाकी है; अवश्य है कि परमेश्वर अपने सभी लोगों को एक आत्मिक देह प्रदान करे ताकि उद्धार का कार्य पूरा हो सके। और तब वे आगे हमें रहने के लिये एक स्थान देंगे – एक नया आकाश और नयी पृथ्वी – सदासर्वदा के लिये। ये सभी बातें अविनाशी मीरास का अंग है।

1 कुरिन्थियों 15:42 में लिखा है :

मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है।

जब परमेश्वर हमें उद्धार देते हैं, वे प्रभु यीशु मसीह को, परमेश्वर के आत्मा को हमारी शारीरिक देह में बो देते हैं, जबकि हम पृथ्वी पर जीवित है, जैसे भूमि में बीज बोते हैं। शारीरिक रूप में हमारी देहें नाशमान है, पर आंतरिक रूप में हमें 'नयी आत्मा और हृदय' दिया गया है, यह बीज जिसे परमेश्वर ने बोया है – यही वह बीज है जो ''अविनाशी रूप में जी उठता है'', इसका अर्थ है कि यह संसार के अंत की ओर संकेत करता है, क्योंकि वह दिन मृतकों के पुनरूत्थान और उन संतों के स्वर्गारोहण का दिन होगा, जो पृथ्वी पर जीवित होंगे और फिर तब मसीह उद्धार का कार्य पूर्ण करेंगे। आइये हम 1 कुरिन्थियों 15: 49–54 से कुछ और बातें पढ़ें और विचार करें :

और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्‌टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥ हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी

नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

बात बिल्कुल सीधी और स्पष्ट है, परमेश्वर संकेत कर रहे हैं कि उस अविनाशी मुकुट को ग्रहण करने का एक समय है। 1 कुरिन्थियों 9 में एक मुकुट के बारे में कहा गया है, परन्तु यहाँ कहा गया है कि स्वाभाविक मनुष्य मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये कितना कुछ करता है, अर्थात् वे अपनी देहों को नियंत्रण में रखते है, वे अति अनुशासन में अपना जीवन बिताते हैं कि वे क्या खाते और क्या करते है। जहाँ तक मदिरापान और धूम्रपान का प्रश्न है, वे अपनी इच्छा पर अंकुश लगाते है, पर वे यह परमेश्वर की सेवा करने के लिये नहीं कर रहे है। परमेश्वर भी कहते है कि हम संयम का जीवन जीयें, हमें हत्या नहीं करनी चाहिये और धूम्रपान करना देह की हत्या करने जैसा है, इसलिये वे ये सब नहीं करते हैं परन्तु वे यह सब परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रत्युत्तर में नहीं कर रहे हैं, बल्की यह उनकी अपनी इच्छा और लालसा है कि वे प्रतिष्ठा (यश) पाये और उनके संगी साथियों से अधिक ऊँचे पर उठे। इसलिये उन्हें प्रतिफल मिलेगा और उनमें से कुछ को ईनाम भी मिलेगा पर यह मुरझाने वाला मुकुट है, यह तात्कालिक है – शीघ्र ही प्रशंसा समाप्त होगी और मुकुट मुरझा जायेगा।

परन्तु परमेश्वर की संतान को एक "न मुरझाने वाला मुकुट" मिलेगा। यह एक नयी पुनरूत्थान प्राप्त देह है, एक अनंत कालीन आत्मिक देह जो कभी नहीं मरेगी और हम उस नयी सृष्टि में सदा जीवित रहेंगे जो परमेश्वर अपने सभी लोगों को मीरास में देगा। स्मरण करे कि जब इस्राएलियों ने कनान देश में प्रवेश कर लिया, और वहाँ रहने वाली जातियों को जीत कर देश पर आधिपत्य कर लिया, तब यहोशू ने चिट्ठिया डालकर प्रत्येक गोत्र के लोगों को उनकी मीरास दी। तब हर एक गोत्र में जितने भी परिवार थे उन सबकी मीरास दी गई। वही विचार यहाँ भी है। यह प्रतिज्ञा का देश, परमेश्वर का राज्य है और जिस दिन हम उस में प्रवेश करेंगे तब समस्त प्रतिज्ञा के देश में फसल होगी, और परमेश्वर ने स्वयं को सच्चा और विश्वासयोग्य दर्शाया है। तब आप वहाँ होंगे और आपकी अनंत मीरास होगी – अनंत जीवन और सदा के लिये उस महिमामय राज्य का एक भाग जिसे स्वयं परमेश्वर ने अपनी प्रजा के लिये बनाया है। यह सब कुछ उस न मुरझाने वाले मुकुट का भाग है, आइये हम 'मुकुट' के संबंध में एक और पद को पढ़ें। याकूब 1:12 में लिखा है :

धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।

पुनः देखिये, जीवन का मुकुट, वह कभी मुरझाने का नहीं, जैसा कि हमने यह भाषा बाईबल के अन्य स्थलों में देखी है, यह पुनरूत्थान के और अंतिम दिन से संबंधित है। ध्यान दीजिये, परमेश्वर याकूब 1:12 में कहते है – "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पायेगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों से की है।" दूसरे शब्दों में, जब उसकी परीक्षा होगी और परीक्षा का काल समाप्त होगा तब उसे जीवन का मुकुट मिलेगा, अविनाशी मुकुट। अब यह बात महत्वपूर्ण है क्योंकि हम देख चुके है कि यह 'न्याय का दिन' है और हम उस दिन में पृथ्वी पर निवास कर रहे है। परमेश्वर अपने लोगों को आत्मिक आग के द्वारा परख रहे है, वे हम सभी को उस आग के द्वारा जाँच रहे है कि वे ''सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थर'' है (सच्चे विश्वासीजन) या फिर ''काठ, भूसी, चारा'' (अविश्वासी–जन) है। ''काठ, भूसी, चारा'' न्याय के दिन जल जाएंगे परंतु ''सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर'' आग से शुद्ध होकर निकलेंगे। वे जाँच में सही साबित होगे और परीक्षाकाल के अंत में, या न्यायदिन के समापन पर वे 'जीवन का मुकुट' पाएंगे। वे उस अविनाशी मुकुट को पाएंगे।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि इस वर्तमान संसार के अंत में, अर्थात न्याय के दिन के अंत में जब परमेश्वर का क्रोध समाप्त होता है कि कैसे वहा न मुरझाने वाला मुकुट, पुनरूत्थान प्राप्त देह और उससे जुड़ी अन्य सभी मीरासें हमारे लिये है। इन बातों की सहायता से हम समझ सकते है कि जब प्रभु 1कुरिन्थियो 9:24 में कहते हैं, ''क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ते तो सब ही है, परन्तु ईनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ों कि जीतों।'' इसका अर्थ क्या है। यह फर्लांग वह दूरी है जिसे हम में से प्रत्येक को दौड़ना है, परमेश्वर हम में से प्रत्येक से कह रहे है। व्यक्तिगत रूप में, वे आप से कह रहे हैं, और वे मुझ से कह रहे हैं। आपको प्रोत्साहित किया जा रहा है कि आप उस फर्लांग (कोसों तक) की दौड दौड़ें और न मुरझाने वाला मुकुट प्राप्त करे। मुझे भी कोसों तक दौड दौडने का प्रोत्साहन मिला है ताकि मैं भी वह न मुरझाने वाला मुकुट प्राप्त करू। यह बहुत ही व्यक्तिगत है। परमेश्वर सीधी तौर पर हम में से प्रत्येक से कह रहे हैं और उस फर्लांग में दौड़ना और इनाम पर दृष्टि रखना हमारी बुलाहट में है, ''जो बातें पीछे रह गयी है उनको भूलकर आगे की बातों की ओर दौड़ा चला जाता हूँ ताकि वह ईनाम पाऊं जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में उपर बुलाया है'', जैसा कि फिलिप्पियों के 3 अध्याय में लिखा है। यह अनंतजीवन का इनाम है। इसकी तुलना आप किसी से नहीं कर सकते। अनंत जीवन के समतुल्य कुछ भी नहीं है। यह हमारे सामने रखे सभी संभावित इनामों में सर्वश्रेष्ठ है। केवल एक बात की आवश्यकता है, हम इस दौड़ में वैसे दौड़े जैसी परमेश्वर की आज्ञा है।

यह रोचक बात है कि बाईबल अपने शब्दों को स्वयं परिभाषित करती है, बाईबल छुपे सत्यों या गुप्त सत्यों की पुस्तक है और हम कभी यह नहीं मान सकते कि शब्दों का वही अर्थ होगा जो हम सोचते है या फिर हम परिभाषित करते हैं कि क्या अर्थ होना चाहिये। हमारी पृथ्वी की भाषा या वेबस्टर शब्दकोष में दी गई परिभाषा बाईबल सम्मत परिभाषा नहीं है। जब हम कोई शब्द देखते हैं जैसे कि ''दौड़ना'' तब हम अपने अनुभव के आधार पर यह नहीं कह सकते कि – "मैं इसका अर्थ जानता हूँ। इसका अर्थ है अपने पैरों को तेजी से उठाकर किसी जगह तुरंत चले जाना।" वह पृथ्वी की परिभाषा है, परन्तु बाईबल की परिभाषा क्या है? परमेश्वर स्वयं 'दौड़ना' शब्द का अर्थ भजन 119:32 में बताते है :

..... तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा॥

अर्थात् परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करूंगा। एक बार जब परमेश्वर ने किसी आज्ञा को प्रगट किया और हमारी समझ को खोलकर उसका अर्थ हमें बताया, तब हम ''उसकी आज्ञा के मार्ग में दौड़ते है'', और यह हमारी उत्सुकता और इच्छा को दर्शाता है जो हमारे हृदय से परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये निकलती है।

साथ ही हम पाते हैं कि परमेश्वर अंत के दिनों के संदर्भ में दौड़ने की बात कहते है। हबक्कूक 2:2–3 में लिखा है :

यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं। क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देर न होगी।

मैंने सर्वनाम 'वह' हटाकर पुल्लिंग कर दिया है क्योंकि यह परमेश्वर के लिये प्रयोग हुआ है, यह पवित्र आत्मा है और उसके साथ वह (नपुंसक लिंग) के स्थान पर वह (पुल्लिंग) का प्रयोग करना उचित है। यह पद इब्रानियों के अध्याय 10 से है, और हम जानते है कि पुल्लिंग सर्वनाम सही है क्योंकि इब्रानियों 10:37 में लिखा है :

क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि आने वाला आएगा, और देर न करेगा।

यहाँ परमेश्वर पुल्लिंग सर्वनाम 'वह' उपयोग करते है और यह अंत के दिनों के संबंध में है, जब परमेश्वर का वचन बोलेगा और परमेश्वर पवित्र आत्मा बोलेगा, जब परमेश्वर (अंत के समय के लिये मुहरबन्द) बाईबल की बातों की मुहर खोलेंगे। वे दानिय्येल से कह चुके थे – ''इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख।''

अंत के समय में बाईबल की मुहर खोली गई और तब परमेश्वर ने अपने लोगो पर ऐसी कई महत्वपूर्ण आत्मिक बातों का खुलासा किया जो महाक्लेश का समय और नियुक्त न्याय के दिन से संबंधीत है। हबक्कूक 2:2 लिखते समय यह विचार उनके मन में था, जहाँ लिखा है, ''दर्शन की बातें लिख लें, वरन पटियाओं पर साफ–साफ लिख दे कि दौड़ते हुये भी वे सहज से पढ़ी जाए।'' पटियाओं का संदर्भ दस आज्ञाओं से हो सकता है, उन्हें पत्थर की पटियाओं पर लिखा गया था। और 'दर्शन की बातें लिख ले'' का संबंध परमेश्वर के वचन से है और उन्हें 'साफ–साफ' लिखना है – अर्थात् न छुपाया जाये, न मुहरबन्द किया जाये, पर परमेश्वर के लोगों के विचार में लाया जाये ताकि वे 'समय और न्याय' के विषय में जान सके। प्रभु परमेश्वर अपनी गुप्त बातों को अपने सेवकों, अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट करेंगे। ''जो बुद्धिमान है वे ही उसे समझेंगे, और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेंगे।''

आगे कहा गया है – ''दौड़ते हुये भी वे सहज से पढ़ी जाये।'' मेरे विचार से इसका सीधा संबंध उन बातों (जानकारियों) से है जो परमेश्वर ने महाक्लेश के समय मुहर खोलकर प्रगट की। विशेष रूप में 21 मई 2011 को आने वाले न्याय के दिन के विषय में। जब परमेश्वर उस जानकारी को प्रगट किया, उन्होंने अपनी प्रजा के लोगों को इतना अधिक प्रेरित किया कि उन्होंने उस उद्धार के संदेश को संसार के लोगों की दृष्टि में लाने के लिये सभी प्रकार की आत्मिक गतिविधियाँ की; वह संदेश उनके ठीक सामने रखा गया ताकि वे किसी प्रकार उनकी अनदेखी, उपेक्षा और अनसुनी न करे – वह संदेश हर जगह था। यह इसलिये हुआ कि लोग परमेश्वर की आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ें, और आज्ञापालन करते हुए "दौड़ते हुये भी वे सहज से पढ़ी जाये", परमेश्वर के लोग पढ़ सके और परमेश्वर के द्वारा प्रगट की गई बातों को समझ सकें, और परिणामस्वरूप वे अद्‌भुत विश्वासयोग्यता के साथ दौड़ें ताकि वे पहरेदार बनें, तुरही फूंके और लोगों को आने वाले क्रोध के दिन की चेतावनी दे और आने वाले न्याय के दिन की घोषणा करे।

यह भी सत्य है कि परमेश्वर 'न्याय के दिन' में दौड़ने के विषय में कहते हैं। मेरा विचार है कि विशेषकर इसी विषय पर 1 कुरिन्थियों अध्याय 9 केन्द्रित है, वहाँ लिखा है, ''क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौडते तो सब ही है'' क्योकि सौ कोस (1600 फर्लोंग्स) 21 मई 2011 को आरंभ हुए और यह दौड का अंतिम चरन होगा (जैसा कि यहाँ पाँवों से दौड़ने की बात है)। यह उस दौड़ का अंतिम भाग है जिसमें परमेश्वर के लोग इस संसार में दौड़ेंगे। फर्लोंग के अंत में, जब हम 1600 वें कोस पर या 1600 वें दिन पर पहुँचते है (जो न्याय के दिन का 10,000 वा दिन भी है), तब 7 अक्तुबर 2015 को न्याय का दिन पूरा होता है, जो की कटनी का और झोंपड़ियों के पर्व का भी अंतिम दिन होगा। स्मरण करे कि परमेश्वर 'झोंपड़ियों के पर्व' को 'अंत का दिन' कहते है और 'अंतिम दिन' को पुनरूत्थान के साथ दर्शाते है। यह वाक्यांश बाईबल में केवल आठ बार आया है, और दो बार उसका संदर्भ झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन से है, और अन्य स्थलों पर अंतिम दिन के न्याय और अंतिम दिन में पुनरूत्थान के संदर्भ में हैं। पुनरूत्थान के दिन के अंत में क्या

होगा? वहाँ न मुरझाने वाला मुकुट है – इसका अर्थ है वहाँ दौड़ समाप्त होती है और तब वह मुकुट दिया जायेगा और परमेश्वर के लोग उसे स्वीकार करेंगे फिर भी हमें चाहिये कि उसे प्राप्त करने के लिये दौड़े।

योएल की किताब के दुसरे अध्याय में, प्रभु प्रकाशितवाक्य अध्याय 9 के समान्तर एक वृतान्त देते हैं। उसमें वे एक बड़ी सामर्थी सेना की बात कहते है, जो न्याय करेगी, वे विश्वासी है जो मसीह के साथ आते हैं। प्रभु आएंगे और उनके सभी सन्त उनके साथ होगे। उदाहरण के लिये, योएल 2:1 में यह लिखा है :

सिय्योन में नरसिंगा फूंको ; मेरे पवित्र पर्वत पर सांस बान्ध कर फूंको! देश के सब रहने वाले कांप उठें, क्योंकि यहोवा का दिन आता है, वरन वह निकट ही है।

यह बात स्मरण रखें कि हम दौड़ने के विषय पर विचार कर रहे हैं। हमें फर्लांग में दौड़ना है। यहाँ परमेश्वर अपने लोगों के बारे में कह रहे हैं कि वे बड़ी सामर्थी सेना है, उनका मुख घोड़ों के समान है और घुड़सवारों के समान है और वे सवारी के घोड़ों के समान दौड़ते है। ध्यान दीजिये कि कितनी बार 'दौड़ने' शब्द का उपयोग हुआ है। आगे योएल 2:5–9 में लिखा है :

उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का, वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का, था जैसे पांति बान्धे हुए बली योद्धाओं का शब्द होता है॥ उनके सामने जाति जाति के लोग पीड़ित होते हैं, सब के मुख मलीन होते हैं। वे शूरवीरों की नाईं दौड़ते, और योद्धाओं की भांति शहरपनाह पर चढ़ते हैं वे अपने अपने मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा। वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपनी अपनी राह पर चलते हैं; शस्त्रों का साम्हना करने से भी उनकी पांति नहीं टूटती। वे नगर में इधर-उधर दौड़ते, और शहरपनाह पर चढ़ते हैं; वे घरों में ऐसे घुसते हैं जैसे चोर खिड़कियों से घुसते हैं॥

हम जानते हैं कि कब यह होगा, क्योंकि योएल 2:10 में यह लिखा है :

उनके आगे पृथ्वी कांप उठती है, और आकाश थरथराता है। सूर्य और चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं झलकते।

यह एक ऐसी पद है जो हमें उस समय की महत्वपूर्ण जानकारी देती है क्योंकि मत्ती 24:29 में बताया गया है कि जब क्लेश का अंत होगा, उसके तुरन्त बाद सूर्य अंधेरा हो जाएगा, चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा। इसलिये यह संदर्भ न्याय के दिनों का अर्थात 21 मई 2011 का है, परमेश्वर की यह सामर्थी सेना आगे बढ़ेगी और वे 'दौडेंगे'। योएल की पुस्तक

में चार बार यह वाक्यांश उपयोग किया गया है। वे क्यों दौड़ रहे हैं? क्या इसलिये कि हम अपने मन में एक सेना के दौड़ने की तस्वीर उभार सके? नहीं – हम उस शब्द पर ध्यान करे कि बाईबल का क्या अर्थ है, जब वह इस वाक्यांश का उपयोग करती है – ''मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौंडूंगा।'' वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसे पूरा करने दौड़ रहे हैं, जब क्रोध के दिन उन पर परमेश्वर के धर्ममय न्याय की बातों को प्रगट करते है जैसा कि रोमियों 2:5 में हमें बताया गया है। जैसे–जैसे परमेश्वर लगातार पवित्रशास्त्र की बातों को खोलते और बताते है, उन्हें उन बातों का प्रचार करना और बेबीलोन के पतन की घोषणा करना और सभी जातियों और संसार के सभी देशों के समक्ष फिर से भविष्यवाणी करना है। यही कारण है कि चार बार लिखा है – वे दौड़ेंगे। ये चार बार चार दिशाओं – उत्तर दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर संकेत है। समस्त पृथ्वी पर परमेश्वर के सभी लोग (एक बड़ी भीड़) उस बड़ी और सामर्थी सेना के भाग है।

हमारा समय समाप्त हो रहा है, परन्तु यहाँ टिड्डियों का उल्लेख भी है – प्रकाशितवाक्य 9:7–9 में लिखा है :

और उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के से थे, और उन के सिरों पर मानों सोने के मुकुट थे; और उसके मुंह मनुष्यों के से थे। और उन के बाल स्त्रियों के से, और दांत सिहों के से थे। और वे लोहे की सी झिलम पहिने थे, और उन के पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लड़ाई में दौड़ते हों।

वे न्याय के दिनों में दौड़ रहे है। परमेश्वर के लोग, जो यहाँ टिड्डियों और योएल 2 में 'एक बड़ी सेना' के रूप में दर्शाए गए है, वे न्याय के दिन में दौडेंगे। वे कोसों दौड़ेंगे। वे एक दौड़ में दौड़ रहे है।

हमें बड़ी आशा और अपेक्षा है कि कोसों की दौड़ पूरी करने के बाद अन्त में अनंतजीवन का 'न मुरझाने वाला मुकुट' रखा है।

Revelation 14 Series, Study #55 by Chris McCann, originally aired October 27, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 55, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 27 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 55 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:20 अर्थात अंतिम वचन पर चर्चा कर रहे हैं :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

हम सौ कोस (1600 फर्लोंग्स) पर चार्चा करेंगे। जैसे कि आप जानते है कि ई–बायबल फेलोशिप इसम्भावना की ओर देखते आ रही है कि यह सौ कोस (1600 फर्लोंग्स) को "1600 दिन" के रूप मे समझा जाना चाहिए। तथ्य यह है कि प्रकाशितवाक्य 14 में लिखे अनुसार स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसमें 'न्याय के दिन' पर बहुत अधिक जोर दिया गया है कि प्रभु ने इस संदर्भ में 'न्याय के दिन' और 'जगत के अंत' या कटनी के संदर्भ में "एक अंक" दिया है जो न्याय के दिन के विस्तार को प्रगट करता है। यह अंक 'सौ कोस' या '1600 फर्लोंग्स' है, अर्थात् रसकुण्ड से बहने वाला लोहू 'घोड़े की लगामों' तक पहुँचा और सौ कोस (1600 फर्लोंग्स) तक बह गया। यहाँ पर अंक क्यों दिया गया है और यही अंक क्यों दिया है? यह कुछ अलग तरीकों से एक बहुत ही विशेष अंक है क्योंकि यह बाईबल में अन्य स्थानों पर प्राप्त जानकारी जो हमने सीखी थी, उससे सिद्ध रूप में सही बैठती है और तालमेल रखती है।

इसके पहले कि हम उस अंक के विषय में चर्चा करे और देखे कि 'सौ कोस' या (1600 फर्लोंग्स) कितनी अच्छी तरह और कितने सटीक रूप में संसार के अंत में परमेश्वर के न्याय के सम्पूर्ण समय विभाजन से ताल–मेल रखती है, हम सबसे पहले यह प्रश्न करे, जिसके विषय में मैं जानता हूँ कि बहुत से लोगों को यह आश्चर्य में डालता है और वे जानना चाहते है। क्या हम इन 1600 फर्लोंग्स को सही रीति से 1600 दिनों का प्रतिक समझ सकते है? क्या इसकी अनुमती है? क्या परमेश्वर इस तरह की परिभाषा की अनुमती देते है?

हम इस बात का क्या प्रत्युत्तर दे कि पवित्रशास्त्र की बातों को सिद्ध करने का एकमात्र तरीका उन्हें बाईबल से ही सिद्ध करने का है? इसलिये हमें क्या करना चाहिये, हमें बाईबल में ही खोजना चाहिये क्योंकि आलोचक कहेंगे कि 1600 फर्लोंग्स समय का नाप नहीं है। और यह एक ऐसा अंक है जिसका संबंध दूरी से है – एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी, और जब हमने बाईबल में परमेश्वर द्वारा उपयोग किये गये 'फर्लांग' शब्द का अध्ययन किया, जहाँ लिखा है – बैतनिय्याह की यरूशलेम से दूरी 'पन्द्रह फर्लांग' और यरूशलेम से इम्माऊस 'साठ फर्लांग' दूर है, और अन्य विवरणों के अनुसार यह दूरी है। जबकि सत्य यही है कि दूरी चलने में समय लगाता है और अपने आप में फर्लांग सामान्य रूप में 'समय' का माप नहीं है। उदाहरण के लिये यह शब्द 'दिन', 'घण्टा', 'सप्ताह', 'मिनिट', 'वर्ष' या महीना नहीं है, या अन्य शब्द जिनसे परमेश्वर समय को अभिव्यक्त करते है, आलोचक प्रश्न कर सकते है कि परमेश्वर ने "1600 दिन" इस शब्द का प्रयोग क्यों नहीं किया। उसके कुछ कारण है।

1) हम जानते हैं कि परमेश्वर बाईबल में सत्य गुप्त रखे है। उन्होंने बाईबल इसी प्रकार लिखी थी। यही कारण है कि उन्होंने दृष्टांतों में बातें की। आपको वह जानकारी खोजनी होगी और परमेश्वर के वचन को गहिराई से समझना होगा। परमेश्वर न्याय के दिन से संबंधित जानकारी को विशेष रूप में गुप्त रखना चाहते हैं क्योंकि अन्य बहुत सी धर्मशिक्षाएं भी गुप्त रखी गयी थी जिनका संबंध 'न्याय के दिन' से था। 'नरक की धर्मशिक्षा' में बहुत सी बातों का संबंध 'न्याय के दिन' से है, यह कि क्या वह एक दिन है या पृथ्वी पर लम्बा चलने वाला कालखण्ड है, उसमें बाईबल की विशेष भाषा का अधिकतर उपयोग किया गया है, वहाँ हम पढ़ते है कि पृथ्वी के उद्धार न पाए लोग 'रोना और दांत–पीसना' जैसे अनुभव कर रहे हैं या अन्य पवित्रशास्त्र के वचन जिनके अनुसार यातना सहने का एक कालखण्ड होगा। 'न्याय के दिन' का लम्बा समय या अधिक दिनों तक चलना, पवित्रशास्त्र के इन सभी वृतान्तों को संतुष्ट करता है, यद्यपि मसीह का न्याय करने एकक्षण या एक दिन में प्रगट होना और समस्त संसार का न्याय, पवित्रशास्त्र के अन्य पदों के साथ पूर्णरीति से तालमेल नहीं बैठाता और न समझाया जा सकता है।

2) एक दूसरा कारण कि परमेश्वर ने '1600 दिनों' का वर्णन नही किया क्योंकि बाईबल में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कही भी जहाँ समय की गणना दी गई है, वह शाब्दिक समय नहीं है। उदाहरण के लिये जब परमेश्वर दो गवाहों के मरने के बाद 'साढ़े तीन दिन' सड़कों पर पड़े रहने की बात करते हैं, तब वह शब्दशः 'साढ़े तीन दिन' का समय नहीं है। यह वास्तव में 2300 दिनों या 6 वर्षों से अधीक समय का कालखण्ड है। जब परमेश्वर 1260 दिनों की चर्चा करते हैं कि स्त्री जंगल में भाग गई, वे सम्पूर्ण कलीसियाई युग की बात कर रहे हैं जो कि सैकड़ो–सैकड़ों वर्ष का समय है। जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पढ़ते हैं कि शैतान को 'एक हजार' वर्ष के लिये बाँधा गया, यह भी प्रतीकात्मक अंक है और कलीसियाई युग के 1955 वर्षों को दर्शाता है। एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है जब समय की गणना शाब्दिक हो और यह हमारी भूल है कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 9 में वर्णित 'पाँच महीने' को 5 माह मान लिए। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक भी वर्णन ऐसा नहीं है जहाँ दिया गया समय शाब्दिक रूप में भी उतना ही है। जैसा लिखा है, हमें उन्हें वैसा नहीं समझना चाहिये। वे सब समय या कालखण्ड की एक अन्य वास्तविक अवधि के द्योतक है। हमें 5 महीने के बारे में सीखना पडा। एक बार जब 21 अक्तुबर 2011 गुजर गया तब हमने जाना कि ये 'पाँच महीने' का समय शब्दशः 'पाँच महीने' नहीं है। और 'वाचा का संदूक' पलिस्तीनियों के कब्जे में जितने समय (सात महीने) रहा, वह प्रतीक रूप में महाक्लेश के सम्पूर्ण कार्यकाल का द्योतक है जो वास्तव में 23 वर्षों का था। इसी प्रकार 'पाँच महीने' का अभिप्राय 'न्याय के दिन' की सम्पूर्ण अवधि (वह कितने दिनों में पूरा होगा) को दर्शाता है। वह वास्तविक रूप में चाहे कितना भी लम्बा क्यों न चले, एक प्रतीकात्मक भाषा के रूप में 'पाँच महीने' का समय प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दी गई 'अन्य सभी बातों' से मेल खाता है। उनमें से कोई भी शाब्दिक अर्थों में नहीं है।

यदि प्रकाशितवाक्य 14:20 की हमारी पद में परमेश्वर ने '1600 दिन' कहा होता तो शायद हम उसे आत्मिक रूप में समझते और हम किसी अन्य 'कालखण्ड की गणना' का विचार करते कि संभवतः वह "वास्तविक दिनों" का परिमाण है। इसलिये यह एक अच्छा कारण है कि परमेश्वर ने हमें 'दिनों की गणना' नहीं बताई और फर्लांग (कोस) का उल्लेख किया जिसका समय से कुछ लेना–देना नहीं है। परन्तु जब हम 'पद' में गहिराई से जाते और पवित्रशास्त्र में खोज करते है, और परमेश्वर हमारी समझ को खोलते हैं, और समझाते हैं कि वह अंक कितना महत्वपूर्ण है और महाक्लेश के दिनों की समय–सीमा के साथ सटीक रूप में सही बैठता है, तब हम यह परख लेते हैं कि '1600 फर्लांग' वास्तव में 1600 दिनों का प्रतिक है। तब यह आत्मिक भावार्थ है और यह वैसा नहीं है जैसा अन्य दूसरे समय के संदर्भ है, जिन्हें एक भिन्न कालखण्ड के रूप में समझने की आवश्यकता है। दुसरे शब्दों में, "1600 दिन" वे वास्तविक दिन है जिन्हें "1600 फर्लोंग्स" के द्वारा दर्शाया गया है।

परन्तु फिर प्रश्न है कि हम जो कर रहे हैं, बाईबल में उसकी प्रमाणिकता कहाँ है? आइये हम उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय 40 में पढ़े, वहाँ यूसुफ, परमेश्वर का अति विश्वासनीयजन और सबसे अधिक कठिन परिस्थितियों में भी परमेश्वर का आज्ञाकारी बना रहने वाला व्यक्ति जेल में डाल दिया जाता है, जबकि वह जेल में ही था, उसे अन्य कैदियों का प्रधान बना दिया गया क्योंकि दारोगा की कृपा–दृष्टि उस पर थी और तथ्य यह था कि परमेश्वर का अनुग्रह यूसुफ पर था। परमेश्वर ने यूसुफ को अन्य लोगों की दृष्टि में अनुग्रह प्रदान किया। हम उत्पत्ति 40:6–8 में पढ़ते है :

बिहान को जब यूसुफ उनके पास अन्दर गया, तब उन पर दृष्टि की, तो क्या देखा, कि वे उदास हैं। सो उसने फिरौन के उन हाकिमों से, जो उसके साथ उसके स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, कि आज तुम्हारे मुँह क्यों उदास हैं? उन्होंने उस से कहा, हम दोनो ने स्वपन देखा है, और उनके फल का बताने वाला कोई भी नहीं। यूसुफ ने उनसे कहा, क्या स्वपनों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं? मुझे अपना अपना स्वपन बताओ।

यह बात महत्वपूर्ण है और स्मरण रखनी चाहिये कि ''**स्वपनों का फल कहना परमेश्वर का काम** है।'' परमेश्वर ही उनके वचन का अर्थ समझाने के समर्थ है, और वही उसके वचन में लिखी बातों के संबंध में जिनके अन्य किसी भावार्थ के बारे में हमने नहीं सोचा, हमें अर्थ या अनुवाद, या भावार्थ या परिभाषा प्रदान कर सकते हैं। यदि हम स्वाभाविक तौर पर शब्दों के अर्थ निकालेंगे तो हम परमेश्वर के भावार्थ तक नहीं पहुँचेंगे। परन्तु परमेश्वर तो परमेश्वर है और बाईबल वह पुस्तक है जिसमें परमेश्वर ने कितने ही सत्य छुपाकर रखे हैं। मसीह ने दुष्टांतों में बातें की ताकि वे हमें परमेश्वर के वचन, बाईबल के विषय में सिखा सके कि हम उसे कैसे समझें, इसलिये अवश्य है कि हम परमेश्वर के तौर तरीके पर ध्यान दे विशेष रूप में '1600 फर्लांग' के संबंध में, उत्पत्ति 40:9–12 में आगे लिखा है :

तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वपन यूसुफ को यों बताने लगा: किमैंने स्वपन में देखा, कि मेरे सामने दाखलता है; और उस दाखलता में तीन डालियां हैं: और उसमें मानो कलियां लगी हैं, और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाक लगकर पक गई: और फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था : सो मैंने उन दाखों को लेकर फिरौन के कटोरे में निचोड़ा, और कटोरे को फिरौन के हाथ में दिया। यूसुफ ने उस से कहा, इसका फल यह है; कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है :

यूसुफ वहाँ अर्थ बता रहा था, परन्तु 'अर्थ बताना' किसका काम है? यह परमेश्वर का काम है। आगे उत्पत्ति 40:12 में लिखा है –

तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है

अब यह कैसे संभव है? पिलाने वाले ने एक स्वप्न देखा कि तीन डालियाँ है और यूसुफ अर्थ बताता है कि वे 'तीन दिनों' का प्रतीक है – एक डाली एक दिन को दर्शाती है। तब यूसुफ ने आगे समझाया कि आने वाले तीन दिनों में क्या होगा। पिलाने वाले को उसके पद पर फिर से बहाल कर दिया जायेगा। अब पकानेहारे को प्रोत्साहन मिला क्योंकि उसने सकारात्मक अर्थ सुना, इसलिये उसने भी यूसुफ को अपना स्वप्न बताया। उत्पत्ति 40:16–19 में यह लिखा है :

यह देखकर, कि उसके स्वपन का फल अच्छा निकला, पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा, मैंने भी स्वपन देखा है, वह यह है : मैंने देखा, कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियां हैं : और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिए सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं; और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं। यूसुफ ने कहा, इसका फल यह है; तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा, और पक्षी तेरे मांस को नोच नोच कर खाएंगे।

यह तो अति डरावना अर्थ था, फिर भी सत्य था। तीन दिनों के बाद फिरौन ने 'पकाने वाले' को मरवा दिया। परन्तु हम यह देख रहे हैं कि परमेश्वर ने उन वस्तुओं के द्वारा समय बताया जिनका समय से संबंध नहीं था। पिलाने हारे के स्वप्न में 'तीन डालियाँ थी, और 'पकाने वाले' के स्वप्न में तीन 'टोकरियाँ' थी। अर्थ यह बताया गया कि 'तीन टोकरियाँ तीन दिन है। प्रत्येक टोकरी एक दिन को दर्शाती थी, तीन डालियाँ भी तीन दिनों को दर्शाती थी।

उत्पत्ति के 41 अध्याय में 'पिलाने हारे' को उसका पद फिर से मिला और कुछ वर्षो के लिये उसने यूसुफ को भुला दिया। परन्तु जब फिरौन स्वप्न देखकर विचलित हुआ, हम यह

समझ सकते है कि वह परमेश्वर ही थे जिन्होंने फिरौन को वे स्वप्न दिखाये और वह इतना विचलित हुआ कि उसे चैन नहीं मिला – उसे उनके अर्थ जानना थे, परन्तु उसके देश में कोई बता नहीं पाया, अंत में पिलाने वाले को अपनी गलती का अहसास हुआ, उसने याद किया कि जेलखाने में एक इब्री था जिसने पिलाने वाले और पकाने वाले के स्वप्नों के अर्थ बताये थे। इसलिये यूसुफ को बुलवाया गया, और फिर उत्पत्ति 41:15–28 में लिखा है :

फिरौन ने यूसुफ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बताने वाला कोई भी नहीं; और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है। यूसुफ ने फिरौन से कहा, मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फिरौन के लिये शुभ वचन देगा। फिर फिरौन यूसुफ से कहने लगा, मैं ने अपने स्वप्न में देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूं फिर, क्या देखा, कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकल कर कछार की घास चरने लगी। फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात और गायें निकली, जो दुबली, और बहुत कुरूप, और दुर्बल हैं; मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं। और इन दुर्बल और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी मोटी गायों को खा लिया। और जब वे उन को खा गई तब यह मालूम नहीं होता था कि वे उन को खा गई हैं, क्योंकि वे पहिले की नाईं जैसी की तैसी कुडौल रहीं। तब मैं जाग उठा। फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकलीं। फिर, क्या देखता हूं, कि उनके पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। और इन पतली बालोंने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियों को बताया, पर इस का समझानेहारा कोई नहीं मिला। तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, फिरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसको उसने फिरौन को जताया है। वे सात अच्छी अच्छी गायें सात वर्ष हैं; और वे सात अच्छी अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं; स्वप्न एक ही है। फिर उनके पीछे जो दुर्बल और कुडौल गायें निकलीं, और जो सात छूछी और पुरवाई से मुरझाई हुई बालें निकाली, वे अकाल के सात वर्ष होंगे। यह वही बात है, जो मैं फिरौन से कह चुका हूं, कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसे उसने फिरौन को दिखाया है।

मैं यहाँ पढ़ना बन्द करूंगा, यद्यपि यह एक अद्‌भुत ऐतिहासिक वर्णन है और बाईबल की सुन्दर कहानियों में से एक है। हमारा उद्‌देश्य बाईबल के अनुसार यह बात प्रमाणित करने का प्रयास करना है कि क्या 'फर्लांग' जैसा समय रहित शब्द 'दिन' या 'दिनों के रूप में समझा जा सकता है। जब यूसुफ पिलाने हारे और पकानेहारे और फिरौन के स्वप्नों के अर्थ बताता है, तब हम क्या देखते है? अब तक हमने देखा, उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर

के बताये अर्थ के अनुसार 'तीन डालियाँ', तीन दिन है, परमेश्वर कहते है, 'तीन टोकरियाँ' तीन दिन की प्रतीक है। और ''सात मोटी अन्न से भरी बाले'' सात भरपूर उपज वाले वर्षों को दर्शाती है, और 'सात पतली मुर्झाई बाले; सात अकाल के वर्षों को दर्शाती है। इसी प्रकार परमेश्वर कहते है, 'सात मोटी गायें' – सात भरपूर उपज वाले वर्षों को दर्शाती है और "सात दुबली कुरूप गायें", सात अकाल के वर्षों को दर्शाती है।

भला हो कि हम प्रश्न करें, जैसा हमने प्रकाशितवाक्य 14 की 20 पद में पूछा था, डालियाँ, टोकरिया, गायें और बालों का समय के साथ क्या संबंध है? उत्तर है – 'कुछ भी नहीं' अपने आप में वे समय सूचक शब्द नहीं है और वे ऐसी वस्तुएं है जिनका समय से कोई नाता नहीं। जब परमेश्वर ने उन्हें स्वप्न दिखाये तब क्या पिलाने वाले को 3 दिन के, पकाने वाले को 3 दिन के और फिरौन को 7 वर्ष के स्वप्न नहीं दिखा सकते थे? परमेश्वर उन्हें स्वप्नों में वास्तविक समय सूचक बातें दिखा सकते थे, परन्तु उन्होंने अपने उद्देश्यों के कारण उन्हें वे वस्तुएं दिखाई जिनका समय के साथ कोई संबंध नहीं था। वे चाहते थे कि यूसुफ उनके अर्थ में उन्हें 'समय' बताये। यह बात बाईबल के विषय में बताती है कि संभव है कि परमेश्वर ऐसे शब्द को दे जिसका एक भिन्न अर्थ हो। बाईबल के विभिन्न भागों को समझना एक स्वप्न का अर्थ समझने जैसा है, वास्तव में परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के कुछ लेखकों को स्वप्न दिये और उन्होंने उन बातों को लिखा, और वे बातें ईश्वरीय प्रकाशन थी। यह परमेश्वर का एक तरीका था जिसके द्वारा परमेश्वर ने उसके वचन, बाईबल में 'ईश्वरीय प्रकाशन लिखवाए'। जब हम पवित्रशास्त्र में देख रहे हैं, अर्थात् परमेश्वर के वचन में, तब उत्पत्ति की पुस्तक में लिखी बातें महत्वपूण पूर्वज्ञान है।

कुछ समय पहले, मैं किसी से बातें कर रहा था और उन्होंने किसी का उल्लेख किया, जो पेशे से वकील है। मैंने कहा, ''क्या आपको पता है कि बाईबल भी एक (व्यवस्था) कानून की पुस्तक है। बाईबल एक कानून की पुस्तक के समान है जिसमें हमें खोजबीन करनी पड़ती है जैसे कि वकील किसी केस में पैरवी करते समय करते हैं, और जब वे किसी 'दलील' को रखते हैं, वे उसी प्रकार के पुराने प्रकरणों में खोजते हैं और उससे 'पूर्वज्ञान' प्राप्त करते है। वे उसी से मिलता–जुलता प्रकरण ढूँढ़ते है जिसमें किसी न्यायिक बात को स्थापित किया गया था, फिर वे उसे अपने प्रकरण में उपयोग करते है ताकि उसका लाभ उठा सके। यही प्रक्रिया हम बाईबल के अध्ययन में भी दोहराते है। जब हम पाते हैं कि परमेश्वर ने किसी बात को स्थापित किया है या अर्थ स्पष्ट किया है, जैसे कि तीन डालियाँ जो कि समय सूचक नहीं है, तब यह बात हमें बाईबल का पूर्वज्ञान और प्रमाण प्रदान करती है कि संभव है परमेश्वर '1600 फर्लांग' के द्वारा हमें 'समय' का ज्ञान दे रहे है।

प्रकाशितवाक्य 14 के संदर्भ में, परमेश्वर ने संसार की अंतिम कटनी और न्याय के दिन की योजना की है, और यह 21 मई 2011 से 1600 दिनों तक चलती है, यह कटनी के पर्व के अंतिम दिन तक चलती है अर्थात 7 अक्तुबर 2015 तक। और जब यह होता है तब अन्य बातें भी उसमें सटीक बैठती है और तालमेल रखती है और हमें आश्चर्य होता है कि

'फर्लांग' शब्द 'दिनों' का प्रतिनिधित्व करता है या नही। यह 'पूर्वज्ञान' प्राप्त करने के बाद, जो हमने उत्पत्ति से पाया है, बाईबल कहती है कि हम आगे बढ़ सकते है। मूलरूप में यही वह बात है जो हम देख रहे थे और परमेश्वर की अनुमति है कि हम इस कल्पना में आगे बढें कि '1600 फर्लांग' 1600 दिनों का प्रतीक है। बाईबल इस संभावना की अनुमति देती है।

Revelation 14 Series, Study #56 by Chris McCann, originally aired October 28, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 56, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 28 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 56 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:20 अर्थात अंतिम वचन पर चर्चा कर रहे हैं :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

पिछली बार हमने देखा कि बाईबल में समय रहित वस्तुओं (शब्दों) के द्वारा (जैसे डालियाँ, टोकरियाँ, गायें और गेहूं की बालियाँ इत्यादि) पूर्वज्ञान दिया गया है, उन वस्तुओं (शब्दों) के द्वारा जिनका बाहरी तौर पर समय के साथ दूर–दूर का नाता नहीं है। संदर्भ बिल्कुल स्पष्ट है कि 'न्याय के दिन' की बात की जा रही है, और हम बाईबल से जानते है कि परमेश्वर ने 21 मई 2011 को 'न्याय के दिन' के आरम्भ के लिये मुहरबन्द कर रखा है। हम यह भी जानते हैं कि 'न्याय का दिन' काफी लम्बा कालखण्ड है, सबसे पहले, यह आत्मिक दण्ड (न्याय) है और यह मरकुस 13:24 के अनुसार दिनों (बहुवचन) के रूप में संसार पर प्रकट हो रहा है जिसमें "महाक्लेश के बाद उन दिनों में" का संदर्भ है। सभोपदेशक 12 पद 1 और 2 के अनुसार यह 'वर्षों' की बात करता है, इस प्रकार परमेश्वर ने दो सुराग हमे दिये हैं कि 'न्याय का दिन' लम्बा चलने वाला कालखण्ड है और यह कालखण्ड कई वर्षों का भी हो सकता है। तब हमने अपनी संदर्भ पद में '1600 फर्लोंग्स' का वर्णन पाया, अर्थात् रसकुण्ड से निकलनेवाला लोहू घोड़े की लगामों तक पहुँचा। जब हम ''फर्लोंग्स'' की अदला–बदली ''दिनों'' के साथ करते है, जिसकी अनुमती बाईबल देती है तब हम यह प्रश्न पूछ सकते है : क्या यह सम्भव है कि दुष्टों का जीवन (लोहू में जीवन है) उन 1600 दिनों तक चलेगा जो वह समय अवधी है जिसमें वें परमेश्वर के क्रोध के अधीन है, ऐसा संकेत परमेश्वर दे रहा है?

इस प्रकार हम वहा से शरू करते है; हम जानते है कि 21 मई 2011 न्याय के दिन का आरम्भ था। यह वह दिन था जब बिल्कुल 23 वर्षों बाद महाक्लेश का अंत हुआ। 21 मई

2011 उस महाक्लेश की अवधी का 8400 वा दिन था। जब हम यह समझ गए कि महाक्लेश के उन पूरे 23 वर्ष का आरम्भ 21 मई 1988 को हुआ और समापन 21 मई 2011 को हुआ, और वे बिल्कुल "8400" दिन थे, यह परमेश्वर ने हमें समझने दिया क्या यह दिलचस्प नही है। और वह अंक बिल्कुल सटीक बैठता है क्योंकि "84" इस अंक का महाक्लेश के साथ काफी संबंध है, जब हम उन तस्वीरों को और नमुनों को देखते है जिन्हें परमेश्वर ने महाक्लेश को दर्शाने के लिए किया : वे "70" वर्ष जब यहुदा ने इसापूर्व 609 से, जब योशिया राजा की मृत्यु हुई इसापूर्व 539 तक, जब मेदियों और पार्सीयों ने बेबिलोन पर विजय पाई, महाक्लेश को सहा। वें "70" वर्ष थे और "70 X 12", "840" होता है या "10 X 84" होता है। "10" का अंक परिपूर्णता की ओर संकेत करता है और "84" का अंक महाक्लेश से संबंधीत है।

परमेश्वर ने यूसुफ के दिनों में 'महाक्लेश' की अवधि प्रगट करने के लिये एक और तस्वीर का उपयोग किया है – सात वर्ष का अकाल। हमने अपने पिछले अध्ययन में पढ़ा था कि फिरौन ने जो स्वप्न देखा उसमें '7 मोटी तगड़ी गायें' और 'सात मोटी अन्न से भरी गेहूं की बालियाँ' थी। और एक दुसरे स्वप्न में 7 दुबली पतली गायें' और '7 दुर्बल बालियाँ निकली' और उन्होंने मोटी–तगड़ी गायों और सात गेहूं की मोटे दाने की बालियों' को खा लिया। वे 7 दुबली–पतली गायें और 7 बालियाँ आने वाले 7 वर्ष के अकाल की तस्वीर थी और अकाल 'महाक्लेश' को दर्शाता है। "7" का अंक "12" बार गुणा किया जाए तो वह भी "84" होते है, (एक वर्ष में 12 महिनों के लिए) और यहा फिर से परमेश्वर "84" अंक का उपयोग महाक्लेश के संबंध में करते है। इन अंकों में मेलजोल है, इसलिए जब हमने देखा कि महाक्लेश "8400" दिन होगा, तब यह पुष्टी करनेवाला बाईबल आधारीत प्रमाण था कि परमेश्वर ने सचमुच 21 मई 2011 पर अपनी उँगली रखी थी। वह महाक्लेश का "8400" वा दिन था और सटिक 23 वा वर्ष भी था। इसके अलावा, यह इसापूर्व 4990 में आए उस जलप्रलय के दिन से बिल्कुल 7000 वर्ष थें। क्योंकि जब आप 4990 में 2011 को मिलाते हो और उसमें से 1 घटाते हो (क्योंकि 0 वर्ष नही होता) तब आपको सटिक 7000 वर्ष प्राप्त होते है, और वही दिन जो अन्य प्रमाणों के कारण जिसका मैनें जिक्र किया, सटिक रूप में बैठता है, वह इब्रानी कॅलेंडर का "दुसरे महिने का सत्रहवा दिन था।" यह जलप्रलय से 23 वा वर्ष, 8400 दिन, और 7000 वा वर्ष था, जो रेखांकित तारीख के रूप में "दुसरे महिने का सत्रहवा दिन था।" यह इतना विलक्षण क्यों है? क्योंकि जलप्रलय, जो संसार पर परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है, नूह के कॅलेंडर के अनुसार दुसरे महिने के सत्रहवे दिन आया। उसी दिन परमेश्वर ने जहाज का द्वार बंद किया। उसी तरह आत्मिक रूप से, बिल्कुल 7000 वर्षों के बाद परमेश्वर ने यह ज्ञान दिया कि वह इब्रानी तीथि नूह के दिनों में समानार्थी तारीख थी, जब "द्वार" बंद कर दिया गया। यह इस बात की मजबूत पुष्टी है कि यह सब परमेश्वर ने किया। मैं किसी ऐसे मनुष्य को नही जानता जो इतना बुद्धीमान हो। श्रीमान कॅम्पिंग बहुत ही बुद्धीमान व्यक्ति थे; परंतु वे इतने भी बुद्धीमान नही थे। इस समय रेखा को और इन तीथियों को, गुत्थी (puzzle) के तुकडों को एकसमान जोडने में

कोई भी समर्थ नही था। यह सम्भव नही था। यह परमेश्वर का हाथ था। परमेश्वर जानकारी दे रहे थे कि 21 मई 2011 वह दिन था।

21 मई 2011 की ओर मार्गदर्शन करनेवाली जानकारी के विषय में एक और बात जो हमने सोची थी, वह यह कि न्याय का दिन पाँच महिने चलेगा। उस ओर संकेत करनेवाली जानकारी, विशेषकर प्रकाशित वाक्य का 9 वा अध्याय था, जिसमें पाँच महिनों का जिक्र है। 21 मई 2011 से पाँच महिनों बाद 21 अक्तुबर 2011 था। और वह तारीख झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन था। वह इब्रानी के सातवे महिने का 23 वा दिन था और हम जानते है कि परमेश्वर को झोपडियों का पर्व पूरा करना अवश्य है। यह निश्चित दिखाई पडा, और यह उस जाल का भाग और परिक्षा की योजना का भाग था जिसे केवल परमेश्वर तैयार कर सकते है। यह कितना सटिक दिखाई पडा, और इसमें कितना सटिक मेल था, यह सचमुच अद्‌भुत था। हमनें सोचा, "यह ऐसा है – 21 मई 2011 से 21 अक्तुबर 2011 तक पाँच महिने झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन पूरे होते है।" अब इसमें एक समस्या यह थी कि 8400 दिनों में 153 दिनों को मिलाया जाए तो इससे महत्वपूर्ण आत्मिक अंक नही बनता। "8553" इस अंक के कोई महत्वपूर्ण भाग नही पडते, जो यह सोचने पर मजबूर करे कि परमेश्वर उस अंक से सिखा रहे है। ऐसी कोई बात नही थी। यह केवल पाँच महिने का संदर्भ और यह वास्तविक्ता थी कि यह झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन था, जिसने हमें यह सोचने पर मजबूर किया कि यही वह दिन होना चाहिए। फिर हमने सोचा कि, अब हमारे पास पूरी समय रेखा तयार थी : 21 मई 2011 न्याय के दिन की शुरूवात थी, जो एक लंबा समय है, और फिर पाँच महिने बाद 21 अक्तुबर 2011 को अंत होगा।

जैसा हमने सोचा वैसा नही हुआ, परंतु परमेश्वर 21 मई 2011 को आत्मिक न्याय का दिन ले आया, जिससे हम सब विचलित हुए, क्योंकि हम नही जानते थे कि परमेश्वर क्या कर रहे थे, परंतु सच्चे विश्वासीयों ने खोजना जारी रखा और उन पाँच महिनों के दौरान हमने 21 मई 2011 पर अपना ध्यान केंद्रित किया, क्योकि हमने सोचा कि यह अवश्य ही आत्मिक न्याय होना चाहिए, पर फिर परमेश्वर झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन शाब्दिक रूप में संसार का नाश करेंगे, ताकि उस पर्व को पुरा कर सके। परंतु 21 अक्तुबर 2011 आया और गया और जो लोग बाईबल की इस जानकारी पर विश्वास कर रहे थे, उनके लिए यह एक बडी अतिरिक्त परिक्षा थी। अब, उनमें से कईयो को विश्वास हुआ कि यह सब गलत था, और यह सब भुल थी, और वे पिछे मुडने लगे।

तो भी, परमेश्वर के लोग बाईबल में खोज करते रहे, क्योंकि बाईबल आधारीत इतिहास का कॅलेंडर अब भी 21 मई 2011 को ही दर्शा रहा था। हमारे दृष्टीकोण या विचार में कोई बदलाव नही हुआ, परंतु 21 अक्तुबर 2011 के विषय में क्या? वह जगत का आत्मिक अंत नही हो सकता था। हम 21 अक्तुबर 2011 के विषय में गलत थे, पर हमारी गलती क्या थी? जैसा हम प्रकाशित वाक्य में देखते है, तब हमने सिखा कि सभी "समय–संदर्भो" को आत्मिक रूप में समझना चाहिए। यदि प्रकाशितवाक्य 9 के ''पाँच महिने'' शाब्दिक होते तो,

यह एकमात्र अपवाद होता, इसलिए उसे शाब्दिक रूप में समझना गलती थी। यह ''साडे तीन दिनों'' या ''1200 दिनों'' या ''एक हजार वर्ष'' के समान ही अलंकारिक समय संदर्भ थे, जिन्होंने वास्तविक कालखंड को दर्शाया, इसलिए पाँच महिनों ने न्याय के दिन की अवधी को दर्शाया, फिर चाहे वह वास्तव में कितना ही दिर्घ क्यों न हो। इसें शाब्दिक रूप में नही समझा जाना था, परंतु परमेश्वर ने उसे परिक्षा के लिए बिछाया ताकि सही दिखा सके कि 21 अक्तुबर 2011 ही वह दिन होना चाहिए, क्योंकि यह झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन था, तिसरा और अंतिम पर्व जो पूरा होना अवश्य था।

परंतु देखो, जब हमने बाईबल में खोज करना जारी रखा, हम प्रकाशित वाक्य के अध्याय 4 में आये है, और परमेश्वर हमें "1600" का अंक देते है, जो 21 मई 2011 से मेल रखता है, क्योंकि वह न्याय के दिन के विषय में भी बोलता है। वह कटनी का दिन होगा, जो जगत का अंत है; वह वही दिन होगा जब परमेश्वर के क्रोध का प्याला कलीसियाओं से हटकर जगत पर उण्डेला जाता है, वहाँ ''बेबीलोन के गिर पडनें" का वर्णन है, जो ऐतिहासकि 70 वर्षों का अंत होगा; वे 70 वर्ष महाक्लेश के अंत को दर्शाते है। इस प्रकार, इस अध्याय में दी गयी सारी जानकारी न्याय के दिन के आरम्भ की ओर संकेत करती है, और उस संदर्भ में प्रभु हमें ''1600'' का अंक देते है, इसलिए हम पुछते है, क्या यह सम्भव है कि 1600 दिन न्याय के दिन की अवधी के वास्तिविक दिन होंगे, जिसका आरंभ 21 मई 2011 को हुआ? हमारे पास ''1600'' का अंक है और हमारे पास महाक्लेश के ''8400 दिन'' है, जो हमें बिल्कुल 21 मई 2011 पर ले आए है। हम इन दो अंकों की ओर देखते है, एक ओर हमारे पास कलीसियाओं पर न्याय के 8400 दिन है, तो दुसरी ओर संसार पर न्याय के समय अवधी के ''1600'' दिन है। इन सब अंकों में कैसे मेल बैठता है यह देखने आपकों, निसंदेह, गणितज्ञ बनने की आवश्यक्ता नही है। जब आप ''1600'' और ''8400'' को मिलाते हो, तब आपको 10,000 का अंक प्राप्त होता है। आपको 9999 या 10,046 नही मिलते। वें संभावित संख्याए जिनका गणित 10,000 नही होता, असिमित है। ये संख्याए बढती ही जाती है, और उस अंक की संभावना तक बढती जाती है जो परमेश्वर दे सकता था, जिन्हें मिलाने पर 10,000 का परिपूर्ण अंक नही बनता। और हम उन्हें इस तरह एक साथ मिलानें में समर्थ नही होते, जिसमें परमेश्वर के क्रोध के 10,000 दिनों को स्थापीत किया जा सके।

इस प्रकार न्याय के "10,000" दिन है, पहले 8400 दिनों के लिए (23 वर्ष) कलीसियाओं पर न्याय और उसके बाद क्रोध का प्याला संसार को पीने के लिये दिया गया, जैसा कि परमेश्वर ने संसार से कहा था – ''क्या तुझे दण्ड न दिया जायेगा?'' उन्हें भी क्रोध का कटोरा पीना होगा पर जैसा कि बाईबल दर्शाती है संसार के लोग जो परमेश्वर की इच्छा नहीं जानते थे, उनकी तुलना में स्वयं को मसीही घोषित करने वालों और परमेश्वर की ईच्छा जानने वालों को अधिक क्रोध सहना होगा, संसार को कम क्रोध सहना होगा। उन पर 1600 दिनों तक परमेश्वर का क्रोध प्रकट होता है, परन्तु फिर भी सबके सब परमेश्वर के क्रोध के आधीन है। यह मानवजाति पर परमेश्वर का अंतिम न्याय है, और इसमें सभी

बातों का तालमेल सही बैठता है, क्रोध का प्याला कलीसियाओं को दिया गया क्योंकि न्याय परमेश्वर के घर से आरम्भ हुआ, और उस कथन में यह बताया गया है कि न्याय का अंत संसार की जातियों के न्याय पर होगा, इसलिए "10,000 दिन" वह अंक है जो न्याय को पूरा करता है।

बाईबल में दिए गए अंक शब्द है, और किसी अंक के आत्मिक अर्थ को समझने के लिये हम बाईबल के अन्य स्थानों में खोजते हैं कि उन्हें किस अर्थ में उपयोग किया गया है, उदाहरण के लिये मत्ती 25:1–2 में लिखा है :

तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं।

यहाँ परमेश्वर 'दस कुँवारियों' का दृष्टांत कह रहे हैं और यह उन सबकी "परिपूर्ण संख्या" को दर्शाता है जिन्होंने सुसमाचार प्रचार को प्रत्युत्तर दिया। हम कह सकते है कि वे सब मसीही कहलाते है, पर उनमें से पाँच मूर्ख है और वे उन मसीही कहलाने वालों की तस्वीर है जिन्होंने वास्तव में कभी उद्धार नहीं पाया। परन्तु उनमें 5 बुद्धिमान है और वे उन सच्चे विश्वासियों को दर्शाती है जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है। वे सभी "10" के अंक में शामिल है जो अंगीकार करने वाले सभी विश्वासियों की तस्वीर है।

लूका 15:4–5 में लिखा है :

तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे? और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है।

जब उसने उसे पा लिया, तब उसके पास कितनी भेड़ें है? उसके पास 100 भेड़ें है, और यह अंक 100, भेड़ों की कुल संख्या है। उसी अध्याय में लूका 15:8 में लिखा है :

या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के पास दस सिक्के हों, और उन में से एक खो जाए; तो वह दीया बारकर और घर झाड़ बुहार कर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे?

जब वह उसे ढुँढ लेती है तब उसके पास फिर से 10 हो जाते है। इन दृष्टांतों की समानता की ओर ध्यान दे। दोनों परिस्थितीयों में उन्होंने एक को खोया परंतु जब वह उन्हें मिल जाता है तब वह पूरे "100" या पूरे "10" हो जाते है। जब हम बाईबल में "10" के अंक की ओर देखते है तब हम पाते है कि उसका आत्मिक अर्थ "परिपूर्णता है," फिर वह अंक चाहे "10" हो या "100" या "1000" हो। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 50:10 में लिखा है :

परमेश्वर क्यों इस प्रकार कहते हैं? वे क्यों कहते है कि ''हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे है? वे सभी के बनाने वाले और सृजन करने वाले हैं और सभी प्राणी परमेश्वर के है, इसलिये वे क्यों उन्हें एक सीमित संख्या में 'हजारों पहाड़ों के जानवर' कहते है? क्या यह सच नहीं कि सभी पहाड़ों के प्राणी (जानवर) और संसार के सभी पशु परमेश्वर के है? हाँ, यह सत्य है, परन्तु यह सत्य सिखाने के लिये परमेश्वर यह कथन कहते हैं – ''हजारों पहाड़ों के जानवर'' मेरे है और उनका अभिप्राय उन सभी जानवरों की पूर्ण संख्या से है जिनकी वे चर्चा कर रहे थे। समस्त संसार के 'सभी पहाड़ों के सभी जानवर परमेश्वर के है।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के न्याय के दिन में आने के विषय में पढ़ते है, बाईबल हमें बताती है कि वे संतों के साथ आ रहे हैं और वे संत मसीह के साथ संसार का न्याय करेंगे। यहूदा 1:14 में यह लिखा है :

और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इन के विषय में यह भविष्यद्वाणी की, कि देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया।

क्या आप सोचते हैं कि प्रभु केवल 'दस हजार संतों' के साथ आ रहे हैं या वे उनके सभी संतों के साथ आ रहे हैं जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे है? वे चुने हुओं की समस्त मण्डली के साथ आ रहे हैं, परन्तु सबके लिये 'दस हजार संतों के साथ' वाक्यांश आया है, और इसका सबूत जकर्याह 14:5 में है :

तब तुम मेरे बनाए हुए उस खड्ड से होकर भाग जाओगे, क्योंकि वह खड्ड आसेल तक पहुंचेगा, वरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भुईंडोल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में हुआ था। तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे॥

यहाँ 'प्रभु के दस हजार संत' नहीं कहा गया है, परन्तु 'सब पवित्र' या 'सब संत' कहा गया है। यदि आप जकर्याह 14:5 पढ़ें और तब यहूदा की 14 पद पढ़ें, आप पाएंगे कि दोनों में एक ही बात कही गई है कि मसीह न्याय के दिन अपने 'सब संतों (पवित्रों) के साथ आ रहे है, फिर भी एक पद में 'दस हजार पवित्र' और दूसरी में 'सब संत' कहा गया है। इस बात में हम जानते हैं कि जब परमेश्वर 'दस हजारों' या 'दस हजार' या 'एक हजार अंक का उपयोग करते हैं, तब यह प्रतीकात्मक भाषा है और जिसके लिये उपयोग हुआ है उनकी पूर्ण संख्या को दर्शाता है।

मैं बस एक और उदाहरण, प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 से देना चाहता हूँ, जिसमें प्रभु यीशु ने शैतान को बाँध दिया है। प्रकाशितवाक्य 20:2–3 में यह लिखा है :

और उस ने उस अजगर, अर्थात पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिये बान्ध दिया। और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥

तब प्रकाशितवाक्य 20:7 में लिखा है :

और जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा।

शैतान को सन् 33 में क्रूस के निकट बाँधा गया था, तो क्या वह शाब्दिक अर्थ में 'एक हजार वर्ष' के बाद 1033 ईस्वी में स्वतंत्र किया गया? आप मान लीजिये कि उन दिनों में कुछ परमेश्वर के लोग अवश्य रहे होंगे, जो यह मानने के लिये तैयार थे, और वे सोच रहे थे – यही सत्य होना चाहिये। यह बात समझी जा सकती है। कभी–कभी हम गलती कर सकते है कि किसी समयसूचक अंक को लेकर, विशेष कर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, यह विचार बना ले कि यही वास्तविक समय की गणना है। बहुत से लोग वर्ष 1033 में शैतान के छोड़े जाने को लेकर अति सावधान हुए होंगे, परंतु फिर 1035 आया, और आगे 1100 और 1200 ईस्वी भी आयी; परन्तु बाद में यह समझ में आया कि यह शाब्दिक अर्थ में 'एक हजार वर्ष' नहीं है। यह भी सही है कि इस गलती के कारण उन दिनों के धर्मविज्ञानियों ने टीकाएं लिखी, जिन पर कलीसीयाओं ने विश्वास किया और वे मानते है कि यह भविष्य में आने वाला शाब्दिक कालखण्ड है, जिसमें शैतान को बाँधा जायेगा। वे इस बात को नहीं समझते कि मसीह ने क्रूस पर क्या किया और कैसे बाईबल प्रमाणित करती है कि वह शैतान के बाँधे जाने का समय था। परन्तु जब हम यह बात समझ लेते है, हम प्रकाशितवाक्य में दिये गये समय सूचक शब्दों का आत्मिक अर्थ है, यह समझ जाते है, और इस प्रकार, यह एक हजार वर्ष शैतान को बाँधे जाने का सम्पूर्ण कालखण्ड दर्शाता है, जो सन् 33 में क्रूस की घटना को लेकर 21 मई 1988 तक, जब कलीसियाई युग का अंत हुआ, 1,955 वर्षों का समय है। उसके बाद उसे छोडा गया और परमेश्वर के हाथों में विनाश के शस्त्र के रूप में उसे संसार की कलीसियाओं के विरूध लाया गया।

यहाँ फिर एक बार, "एक हजार" का अंक परिपूर्णता को बिल्कुल वैसे ही दर्शाता है जैसे "10,000" का अंक या "100" या "10" का अंक दर्शाता है। इस प्रकार जब हम 1600 दिनों को 8400 दिनों में मिलाते है जो न्याय के 10,000 दिनों को स्थापीत करता है तब यह परमेश्वर की न्याय की पूर्णता का संकेत है। इससे आगे जाना अनावश्यक है। यह संकेत देता है कि अंतिम दिन यह परमेश्वर के न्याय को पूरा करेगा, (और इस बात की पूरी संम्भावना थी कि 7 अक्तुबर 2015 यह दिन था।) यह बिल्कुल वही है जिसे हम परमेश्वर के वचन अर्थात बाईबल से खोजने की कोशिश करते आ रहे है : कलीसियाओं पर जो न्याय आरंभ हुआ उसे परमेश्वर कब पूरा करेगा, और कब उसे अंतिम रूप देगा? सब कुछ

7 अक्तुबर 2015 की ओर संकेत करता है जो झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन भी है। यह वह दिन था जो हमें लगा कि 21 अक्तुबर 2011 होगा, जो कि झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन है, क्योंकि हम जानते थे कि यह पर्व पूरा किया जाना अवश्य था। परंतु क्या आप देख सकते है कि परमेश्वर ने यह सब कैसे किया ताकि उन सब की परिक्षा ली जा सके जो उसके लोग होने का दावा करते है? उसने 21 अक्तुबर 2011 को वह दिन नही होने दिया, परंतु बाद में उसने न्याय के दिन के पूरे 1600 दिनों के द्वारा समय रेखा को प्रकट किया।

Revelation 14 Series, Study #57 by Chris McCann, originally aired October 29, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 57, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 29 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 57 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:20 अर्थात अंतिम वचन पर चर्चा कर रहे हैं :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

हमारे पिछले अध्ययन में हमने देखा कि जब हम महाक्लूश के 8400 दिनों को न्याय के कालखण्ड के अपेक्षित 1600 दिनों के साथ मिलाते है तब कैसे "10,000" का अंक स्थापीत होता है। इन दोनों को मिलाकर पूरे 10,000 दिन बनते है। अपना क्रोध पूरा करने के लिए परमेश्वर के लिए यह एक आदर्श अंक है, क्योंकि पहले उसने यह प्याला कलीसियाओं को दिया और उसके बाद संसार के राष्ट्रों को। इसके अलावा 10,000 वा दिन 7 अक्तुबर 2015 के पहले नही आता है। वह दिन 1600 वा दिन भी है। दुसरे शब्दों में 21 अक्तुबर 2011 से 7 अक्तुबर 2015, 40 वा चालीस है और 7 अक्तुबर 2015 जब 21 मई 1988 को परमेश्वर के घर से न्याय का आरम्भ हुआ तब से 10,000 वा दिन है। यह अपने आप में 7 अक्तुबर 2015 एक बहुत ही महत्वपूर्ण और दिलचस्प तारीख है। 7 अक्तुबर न्याय के आरम्भ से 10,000 है। 6 अक्तुबर 2011 "9,999" का अंक है और 8 अक्तुबर "10,001" वा अंक है। यह केवल 7 अक्तुबर 2015 ही है जब बिल्कुल 10,000 दिन बनते है, इसलिए हम सोच में पड जाते है कि क्या यह सम्भव है कि जो न्याय परमेश्वर ने जगत की कलीसियाओं और मंण्डलीयों के विरूद्ध शुरू किया उसे पूरा करेगा? निःसंदेह, संसार पर न्याय का अंतिम रूप जगत का विनाश होगा, यह शाब्दिक और भौतिक विनाश होगा जो 1600 दिनों के आत्मिक न्याय के बाद आता है। उसके बाद इस संसार और विश्व का पूरी तरह से विनाश होगा और उद्धार न पाए हुए संसार के लोगों का सर्वनाश होगा और केवल परमेश्वर और उसके चुने हुए लोग ही बचे रहेंगे, क्योंकि तब अनंन्तकालीन भविष्य की शुरूवात होती है।

7 अक्तुबर 2015 के विषय में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह झोंपडियों पर्व का अंतिम दिन भी है। याद करे, 21 अक्तुबर 2011 के विषय में यह एक महत्वपूर्ण बात थी। 21 मई से यह पाँच महीनों का काल था और यह भी झोंपडियों के पर्व का अंतिम दिन था। परंतु अब परमेश्वर ने कटनी के संदर्भ में एक अंक दिया है, और झोंपडियों का पर्व और बटोरन का पर्व एक साथ मनाए जाते है, इसलिए जब हम कहते है कि यह झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन है, तो यह कटनी का भी अंतिम दिन है। उसी संदर्भ में परमेश्वर हमें "1600" का अंक देते है, और यदि हम उसमें उस दिन को मिलाते है जो परमेश्वर हमे 21 मई 2011 को आरम्भ हुए न्याय के रूप में देते है, और हम भविष्य में 1600 दिन जाते है तब वह तारीख 7 अक्तुबर 2015 को आती है जोकि झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन का अति महत्वपूर्ण दिन है। 1600 वा दिन "40 X 40" होगा या परिक्षा की परिपूर्णता होगी। जब से न्याय शुरू हुआ तब से यह 10,000 वा दिन है, क्योंकि 8400 + 1600 = 10,000 है।

परन्तु तब हम यह भी समझ लेते है कि यह दिन 'कटनी का अंतिम दिन' भी है, और प्रकाशितवाक्य 14 के सदंर्भ में 'कटनी' जगत का अंत है, साथ ही यह 'झोंपड़ियों के पर्व' का अंतिम दिन भी है। बाईबल का यह तीसरा और अंतिम पर्व है, बाईबल कहती है कि इसका पूरा होना अवश्य है और यह संसार के विनाश के साथ ही पूरा होगा। यह इसलिये होगा क्योंकि परमेश्वर 'झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन' को बाईबल में दी गयी शब्दावली और भाषा के द्वारा संसार के अंत के अंतिम दिन की पहिचान देते है। हम कुछ ही समय में इस पर विचार करेंगे, परन्तु अभी स्मरण रखें कि परमेश्वर ने अन्य पर्वों को पूरा किया है – फसह का पर्व और पेंटिकुस्त का पर्व। ये दोनो पर्व और साथ में 'झोंपड़ियों का पर्व' मिलाकर तीन प्रमुख पर्व है जिनमें प्रभु कहते है कि इस्राएल के सभी पुरूष परमेश्वर के सामने उस स्थान में उपस्थित हो, जिसे वह चुन लेगा। आत्मिक रूप में, परमेश्वर ने फसह का पर्व पूरा किया, जब मसीह क्रूस पर फसह के दिनों में लटकाया गया। और परमेश्वर ने पेंटिकुस्त के पर्व को आत्मिक रूप में सन् 33 में पूरा किया, जैसा हम प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पढ़ते हैं, ''जब पेंटिकुस्त का दिन आया, पवित्र आत्मा उण्डेला गया और परमेश्वर ने कलीसियाओं और मण्डलियों के द्वारा समस्त संसार में सुसमाचार का प्रचार आरम्भ किया।" तीसरा और अंतिम पर्व और विशेष रूप में झोंपड़ियां के पर्व का अंतिम दिन अंत से संबंधित है। हम बाईबल में 'अंतिम दिन' वाक्यांश 8 बार पढ़ते हैं। दो बार यह झोंपड़ियों के पर्व के संबंध में उपयोग किया गया है। हम नहेम्याह 8:17–18 में एक बार यह वाक्यांश पाते है :

वरन सब मण्डली के लोग जितने बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, झोंपडिय़ां बना कर उन में टिके। नून के पुत्र यहोशू के दिनों से ले कर उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा नहीं किया था। और उस समय बहुत बड़ा आनन्द हुआ। फिर पहिले दिन से पिछले दिन तक एज्रा ने

प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। योंवे सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और साठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई।

यहाँ 'झोंपड़ियां' (booths) शब्द का वर्णन है जो शब्द tabernacles से है। पद 18 में लिखा है, ''पहले दिन से अंतिम दिन तक'' और चूंकि बाईबल में इस संसार के 'अंत' पर इतना अधिक जोर दिया गया है कि आपको लगेगा यह वाक्यांश 'अंतिम–दिन' एक आम बात है, परन्तु यह वाक्यांश पूरी बाईबल में केवल 8 बार आया है। एक बार पुराने नियम में यहाँ नहेम्याह में, इसका सम्बन्ध झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन से है।

साथ ही, नये नियम में परमेश्वर फिर से 'झोंपड़ियों के पर्व' के अंतिम दिन के संदर्भ में इसका उपयोग करते है। यूहन्ना 7:37 में लिखा है :

फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

कुछ लोग इस पद को आधार बनाकर यह कहने का प्रयास करते है – "अच्छा, आपने देखा, परमेश्वर आज भी उद्धार कर रहे है, क्योंकि मसीह लोगों को उनके पास आने और पीने का आमंत्रण दे रहे हैं। यह एक संदेश है कि उद्धार अंतिम दिनों तक उपलब्ध है", परन्तु यदि हम वह करे जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है और इस प्रकार की भाषा की पवित्रशास्त्र में खोजबीन करे, हम इसे 'इस संसार के अंत' और 'नये आकाश, नयी पृथ्वी के सृजन' के संदर्भ में प्रकाशितवाक्य 21 में पाते है। परमेश्वर एक मिलता–जुलता कथन करते है, जैसा हमने अभी–अभी यूहन्ना 7:37 में पढ़ा था। प्रकाशितवाक्य 21:1 में यह लिखा है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

तब प्रकाशितवाक्य 21:4–6 में आगे यह लिखा है :

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।

इस संदर्भ में जहाँ परमेश्वर कहते है – "ये बातें पूरी हो गई है, और इस संसार के लिये उनकी योजना पूरी हो गई है, अब वह समय आ गया है, जब उसके लोगों को नयी पुनरूत्थान प्राप्त देहें दी जायें, और 'नये आकाश और नई पृथ्वी का सृजन हो", परमेश्वर क्यों ऐसा कहते है – ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा?'' इसलिये कि परमेश्वर के लोग जीवन के जल को अनंतकालीन भविष्य में सदा के लिये पीएंगे, यह प्रभु यीशु मसीह के सत्य को पीने की बुलाहट है, और यह ऐसा काम है जिसे परमेश्वर के लोग करते ही रहेंगे – इसका अंत न होगा, कभी ऐसा समय नहीं आएगा कि उनकी प्यास तृप्त हो जाये और हमें 'जीवन के जल' से फिर पीने की आवश्यकता न रहे। इस कारण यह एक सिद्ध (उचित) समय है कि मसीह वह कहे जो हम यूहन्ना 7:37 में पढ़ते है – पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है (यह पर्व झोंपड़ियों का पर्व है) यीशु खड़ा हुआ, और पुकार कर कहा, ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।'' उसके बाद परमेश्वर संसार को नष्ट कर देंगे और हम यह बात समझ सकते है, जब हम वाक्यांश ''अंतिम दिन'' पर विचार करते है। और प्रभु उन बातों को लाते है जिनकी प्रतिज्ञा सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में की गई है, जैसे कि उन्होंने अपने लोगों से यह प्रतिज्ञा की थी कि यह दिन आएगा – ''अंतिम दिन'', और अब उसके लोग प्रभु यीशु मसीह के पाए आएंगे और उनसे पीएंगे – आनन्द की भरपूरी सत्य की भरपूरी, परमेश्वर की भरपूरी और उनसे सीखने की भरपूरी। परमेश्वर को जानना अनंत–जीवन है, इसलिये परमेश्वर के लोग अंतिम–दिन में उस अनंतकाल के सोते में से पीएंगे।

यह रोचक बात है कि 'अंतिम दिन' के 8 उल्लेखों में से 7 नये–नियम में 'यूहन्ना के सुसमाचार' में आये है (और एक नहेम्याह की पुस्तक में है)। आइये हम यूहन्ना 12:48 पर विचार करे :

जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।

इस बात को दोहराने की अवश्यकता है कि 21 मई 2011 को न्याय का दिन शुरू हुआ औा एक अर्थ से तब "अंतिम दिन" का भी आरंम्भ हुआ। यह दिर्घकालीन न्याय का दिन या दिर्घकालीन "अंतिम दिन" है। 21 मई 2011 "अंतिम दिन" था और 7 अक्तुबर 2015 भी "अंतिम दिन" है। और परमेश्वर का वचन इस सम्पूर्ण कालखण्ड के दौरान "अंतिम दिन" में उद्धार न पाए हुए निवासीयो का न्याय कर रहा है।

उस समय जब लाजरस का पूनरूत्थन होने पर था, प्रभु यीशु ने मार्था से बात करने के अवसर का उपयोग किया। युहन्ना 11:23 में लिखा है :

यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।

यह सत्य कथन था। पुनरूत्थन पृथ्वी के अस्तित्व का "अंतिम दिन" है। न्याय के दिन की अवधी सम्भवतः 1600 दिन की है, जिसे हम "अंतिम दिन" के रूप में समझते है, परंतु समय के अंत तक, "अंतिम दिन" तक पुनरूत्थन नही होगा।

हम युहन्ना के 6 वे अध्याय में "अंतिम दिन" यह वाक्यांश चार बार पाते है। यंहन्ना 6:39 में लिखा है :

और मेरे भेजने वाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं।

उसके बाद अंत में युहन्ना 6:54 में लिखा है :

जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा।

यूहन्ना के सुसमाचार में 'अंतिम दिन' के चार संदर्भ है, जो 'अंतिम दिन में पुनरूत्थान' और 'न्याय' की बात से सहमति रखते है क्योंकि लिखा है – ''जो वचन मैंने कहा है वही पिछले दिन (अंतिम दिन) में उसे दोषी ठहराएगा।'' हम अनदेखी नहीं कर सकते कि परमेश्वर ने इस भाषा (शब्दावली) का कैसा उपयोग किया है (और वे बाईबल में बहुधा ऐसा करते है) और वे बहुत से संदर्भ पदों के द्वारा पवित्रशास्त्र में बहुत से विचार रखते हैं – अंतिम दिन, पुनरूत्थान का दिन है, अंतिम दिन न्याय का दिन है; फिर वे इसी वाक्यांश को एक दूसरे तरीके से उपयोग करते है कि हमें इस दूसरी बात को सीखने में सहायता मिले कि यह भी पुनरूत्थान के दिन और न्याय के दिन से संबंधित है और इस परिस्थिती में यह झोंपड़ियों का पर्व, और "अंतिम दिन" है। 8 में से 2 बार यह वाक्यांश 'झोंपड़ियों के पर्व' – अंतिम महत्वपूर्ण और बड़ा पर्व, जिसका पूरा होना अवश्य है, उसके संदर्भ में आया है। एक बार फिर कहता हूँ – फसह के समय में परमेश्वर ने आत्मिक रूप में उस पर्व को पूरा किया और 'प्रथम फलों' के समय में या पेंटिकुस्त के पर्व में परमेश्वर ने आत्मिक रूप में पेंटिकुस्त के पर्व को पूरा किया। इसलिये हम मान सकते है कि 'झोंपड़ियों के पर्व' के समय (पर्व के अंतिम दिन) परमेश्वर आत्मिक रूप में उस पर्व के अर्थ को पूरा करेंगे, उस उद्देश्य के लिये, जिस अर्थ में उन्होंने पर्व के बारे में बाईबल में लिखा है, अर्थात् संसार के अंत के साथ उसकी पहचान दी है।

उस पर्व का आत्मिक अर्थ तब पूरा होगा जब परमेश्वर जगत का विनाश करता है, इस प्रकार हम देख सकते है कि 7 अक्तुबर 2015 (कोई अन्य दिन नही) 21 मई 2011 से 40 वा चालीस है और 21 मई 1988 से न्याय के दिन का 10,000 वा दिन है और झोपडियों के पर्व का अंतिम दिन है। यही वह दिन है, न इसके पहले, न इसके बाद। वह "अंतिम दिन" है और 10,000 वा दिन पर्व का "अंतिम दिन" और वह दिन है जब प्रभु यीशु ने

पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए।" क्या हम उस समय अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की महिमामय बुलाहट को नही देख सकत? अंत में अभी यह समय आ पहुँचा है जब लिखी हुई बाते पूरी हो गयी। उसके बाद हम अपना ध्यान परमेश्वर के आनंन्द में प्रवेश करने की ओर केंद्रित करेंगे और उस अद्‌भुत महिमामय भविष्य की ओर देखेंगे जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए रखा है।

हम आगे बढ रहे है, परंतु हम और कई बातों पर चर्चा करने में समय व्यतित करेंगे जिस ओर प्रकाशित वाक्य के 14 वे अध्याय में हमारा ध्यान केद्रित हुआ है, लेकिन समय समाप्त हो रहा है। अहमें आगे बढना होगा। 15 वे अध्याय का समय आने के पूर्व यह अच्छा होगा कि यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो हम प्रकाशित वाक्य के 14 वे अध्याय के अध्ययन को पूरा करे। परमेश्वर की इच्छा हुई तो, जैसे–जैसे हम उस ओर बढते है, यह सोचना अद्‌भुत होगा कि हम प्रकाशित वाक्य 21 का अध्ययन करेंगे जिसमें नए आकाश और नयी पृथ्वी, और पवित्र नगर और उसके नाप का वर्णन है, या फिर प्रकाशित वाक्य 22 की ओर देखेंगे जिसमें नए आकाश और नयी पृथ्वी की चर्चा है। वास्तव में यदि यह परमेश्वर की इच्छा हुई और यदि इन बातों के विषय में यह सच है, तो जैसे–जैसे वह दिन नजदीक आता है इस बाईबल अध्ययन के लिए यह बहुत ही अच्छी बात होंगी कि हम इस अंतिम किताब का अध्ययन करें और इस किताब के अंतिम अध्याय का अध्ययन करें।